केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 130 मंगलवार 3 दिसम्बर 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

गांधीनगर चौराहे से अतिक्रमण हटाने की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। शहर के गांधीनगर पक्के बाजार में पटरियों पर फैले अतिक्रमण से राहगीर ही नहीं कारोबारी भी परेशान हैं। कारोबारियों ने ईओ को ज्ञापन देकर पटरियों से अवैध कब्जा हटवाकर रास्ता सुगम बनाने के लिए अनुरोध किया है। पत्र में कहा है कि हनुमानगढ़ी के पीछे जलकल कार्यालय, विद्युत सब स्टेशन कार्यालय और नगर पालिका मार्केट के मुख्य मार्ग के गेट पर अतिक्रमण कर रास्ता अवरोध कर दिया गया है। इससे आवागमन बाधित है। ग्राहक और फरियादियों को आने–जाने में परेशानी हो रही है। गेट के सामने ही मिठाई की दुकान लगाकर रास्ता अवरोध करने वालों पर सख्ती से कार्रवाई हो। ठेला लगने से रास्ता पूरी तरह से बंद हो जाता है, मंगलवार के दिन समस्या और बढ़ जाती है। पत्र देकर व्यापारियों ने सड़क कि पटरी से अवैध कब्जा हटवाकर उसे अतिक्रमण से मुक्त करने के लिए मांग उठाई है। ईओ सुनिष्ठा सिंह ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही कार्रवाई होगी।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हिंसा के खिलाफ प्रस्ताव पारित

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। संस्कार भारती बस्ती इकाई की बैठक सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज रामबाग में हुई। बैठक में बांग्लादेश में हिंदुओं के प्रति हो रहे हिंसा के विरुद्ध सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। डॉ. कैप्टन पीएल मिश्रा ने बांग्लादेश हिंसा को अत्यंत चिंतनीय बताया और कहा कि इस हिंसा के विरुद्ध भारत सरकार को कठोर कार्रवाई करना चाहिए। बस्ती इकाई की संरक्षक पूर्णिमा तिवारी ने कहा गया कि यह हिंसा सुनियोजित रूप से चल रही है। वहां के मंदिर को निशाने पर लेकर आग लगाई जा रही है। उसके विरुद्ध कार्रवाई होनी चाहिए। कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश पाण्डेय ने हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर अपने विचार प्रस्तुत किया। महामंत्री राजेश कुमार मिश्रा ने बांग्लादेश में वहां की सरकार और स्थानीय नागरिकों के कृत्य की निंदा की। रीता त्रिपाठी, उर्मिला पांडेय, सरिता शुक्ला, गीतांजलि, प्रीति श्रीवास्तव, राधिका शुक्ला, स्नेहलता मिश्रा, अंकित गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

घर से किशोरी लापता

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। शहर कोतवाली क्षेत्र के एक मोहल्ले के रहने वाली किशोरी के रहस्यमय ढंग से लापता होने का मामला सामने आया है। पीड़िता की मां ने तहरीर में बताया है कि वह गत 28 नवंबर को घर पर अपने घर पर पति व बच्चों के साथ मौजूद थी। रात करीब आठ बजे देखा कि उनकी 16 वर्षीय बेटी घर पर नहीं है। इसके बाद उसकी खोजबीन शुरू की। इस दौरान उनके पास एक फोन आया कि आपकी लड़की गोरखपुर में है। दोबारा उसी नंबर पर मिलाया तो पता चला कि बेटी गोरखनाथ पुल के पास है। सूचना पर गोरखपुर पहुंचे और काफी खोजबीन के बाद भी कुछ सुराग नहीं लग सका। कोतवाली पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ केस दर्ज कर खोजबीन शुरू कर दी है।

पागल कुत्ते का आतंक

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लालगंज थानाक्षेत्र के जिभियांव गांव में एक पागल कुत्ते का खौफ पूरी रात जारी रहा। पागल कुत्ते ने दो व्यक्तियों सहित एक बकरी को काटकर घायल कर दिया। घायलों को सीएचसी कुदरहा ले जाया गया। डर के कारण ग्रामीण लाठी डंडा लेकर पूरी रात जागते रहे। पागल कुत्ते के चपेट में कलामुल्लाह और हदीसुननिशा आए। प्रधान प्रतिनिधि जिभियांव सदरूद्दीन ने बताया कि पागल कुत्ते की काफी खोजबीन की गई, लेकिन कहीं उसका पता नहीं चल सका। घायलों का प्राथमिक उपचार करवाया गया है।

सर्वदलीय बैठक के बाद संसद में गतिरोध खत्म, सुचारू कामकाज की जगी उम्मीद

नई दिल्ली (आभा)। संसद में बीते कई दिनों से चला आ रहा गतिरोध अब समाप्त होने की दिशा में है। सोमवार को हुई सर्वदलीय मीटिंग के बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष में सदन चलाने को लेकर सहमति बनी है। इसके अलावा केंद्र सरकार ने संविधान पर चर्चा को लेकर सहमति जताई है। संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने विश्वास व्यक्त किया कि मंगलवार से संसद चलेगी। उन्होंने कहा कि लोकसभा में 13 और 14 दिसंबर को संविधान पर चर्चा होगी। वहीं राज्यसभा में इस विषय पर 16 और 17 दिसंबर को चर्चा की जाएगी। कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों का कहना था कि सदन में संविधान पर चर्चा होनी चाहिए ताकि नई पीढ़ी को इसके बारे में

जानने का अवसर मिल सके।

कांग्रेस ने सोमवार सुबह ही कहा था कि विपक्षी दल संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही चलने देने के लिए तैयार हैं, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि संविधान पर चर्चा हो, जैसा कि सरकार ने खुद वादा किया था। विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलवमेंटल इन्क्लूसिल अलायंस' (इंडिया) के घटक दलों की बैठक के बाद कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा था कि सरकार ने संविधान पर चर्चा कराने का वादा किया था और अब उसे यह करना चाहिए।

उन्होंने मीडिया से कहा, 'हम सदन चलाने के लिए तैयार हैं, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि संविधान पर चर्चा हो। सरकार ने संविधान पर चर्चा कराने का वादा किया था।' राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के संसद भवन स्थित कक्ष में विपक्षी दलों के नेताओं ने संसद में आगे की रणनीति को लेकर चर्चा की। इस बैठक में खरगे के अलावा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, द्रमुक नेता टी आर बालू, आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा, राष्ट्रीय जनता दल के संजय यादव और कुछ अन्य दलों के नेता शामिल हुए।

निजीकरण के विरोध में बिजली कर्मचारी लामबंद

लखनऊ (आभा)।यूपी में बिजली वितरण समेत अन्य सेक्टरों को निजी कंपनियों के हवाले करने की तैयारी का विरोध शुरू हो चुका है। यूपी के बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों को दूसरे राज्यों के बिजली इंजीनियरों का भी समर्थन मिलने लगा है। हरियाणा और पंजाब के बिजली कर्मचारियों ने भी यूपी के समर्थन में आंदोलन की धमकी दे दी है। इसे राष्ट्रव्यापी भी बनाने की चेतावनी दी गई है। सोमवार को पीएसईबी इंजीनियर्स एसोसिएशन पंजाब स्टेट पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड और पंजाब स्टेट ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड में इंजीनियर–इन–चीफ से लेकर सहायक इंजीनियरों तक के 2000 से अधिक इंजीनियरों के दल ने यूपी के कर्मचारियों को समर्थन का ऐलान किया। विशेष रूप से आगरा का उदाहरण सबक होना चाहिए था। कहा कि पीएसईबी इंजीनियर्स एसोसिएशन यूपी इंजीनियरों और कर्मचारियों के विरोध प्रदर्शन के फैसले को पूरी तरह से उचित मानता है। कहा कि हम 6 दिसंबर 2024 से शुरू होने वाले आंदोलन को भी पूरा समर्थन देते हैं।

पूर्वमंत्री बादल से फक्र ए कौम का सम्मान वापस, बाथरूम और जूठे बर्तन साफ करेंगे सुखबीर

चण्डीगढ़ (आभा)। सिख समुदाय की सर्वोच्च लौकिक संस्था श्री अकाल तख्त साहिब ने शिरोमणि अकाली दल सरकार के दौरान डेरा सच्चा सौदा प्रमुख राम रहीम को दी गई विवादास्पद माफी पर अपना फैसला सुनाया है। सजा में सुखबीर सिंह बादल, कोर कमेटी के सदस्यों और 2015 की अकाली दल सरकार के कैबिनेट नेताओं के लिए प्रतीकात्मक पश्चाताप शामिल है। सुखबीर बादल मामले को लेकर अकाल तख्त में पांच सिंह साहिबानों की बैठक हुई। इसी बैठक के बाद सजा का ऐलान किया गया है।

श्री अकाल तख्त साहिब ने सुखबीर बादल और 2015 की अकाली सरकार के अन्य कैबिनेट सदस्यों को स्वर्ण मंदिर में शौचालय साफ करने, बर्तन साफ करने समेत अन्य धार्मिक दंड दिया है। 30 अगस्त को, शिअद प्रमुख सुखबीर सिंह बादल को श्री अकाल तख्त साहिब द्वारा 'तनखैया' घोषित किया गया था, जब निकाय ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि पंजाब सरकार के उप मुख्यमंत्री और शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष के रूप में सुखबीर सिंह बादल ने कुछ ऐसे फैसले जिनसे 'पंथक स्वरूप' की छवि को नुकसान पहुंचा।

संभल पहुंचा सपा का प्रतिनिधिमंडल

मुरादाबाद (आभा)। समाजवादी पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल सोमवार को संभल पहुंचा और जामा मस्जिद सर्वेक्षण के दौरान हुई हिंसा में गिरफ्तार लोगों से जेल में जाकर मुलाकात की। जिला कारागार के सूत्रों ने बताया कि मुरादाबाद के पूर्व महापौर डॉ एसटी हसन के नेतृत्व में पहुंचे सपा के प्रतिनिधिमंडल ने संभल हिंसा के आरोपियों से जेल में जाकर मुलाकात की। जेल में बंदियों से मुलाकात के लिए पहले से पर्ची जमा की गई थी।

जेल में मुलाकात करने वालों में पूर्व सांसद डॉक्टर एसटी हसन, अमरोहा जिले की नौगावां सादात विधानसभा सीट से विधायक समरपाल सिंह, ठाकुरद्वारा सीट से विधायक नवाब जान खान समेत कुल 15 लोग शामिल थे। पूर्व सांसद डॉ एसटी हसन ने अपने बयान में कहा है कि संभल हिंसा के बाद काफी लोग यहां जेल में बंद हैं। उन्होंने कहा कि आमतौर पर हिंसा के दौरान ऐसे कई मासूम तमाशबीन भी फंस जाते हैं जिनका बवाल से कोई लेना–देना नहीं होता है।

अवैध निर्माण रोकने की मांगः अधिकारियों से लगाया न्याय की गुहार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के बस्ती खास रेहरवा निवासी जगदीश प्रसाद और संगीता देवी पत्नी राजेन्द्र ने रास्ते और जमीन पर जबरिया कब्जा करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई की मांग किया है। इस सम्बन्ध में उप जिलाधिकारी बस्ती सदर ने थानाध्यक्ष पुरानी बस्ती को निर्देश दिया है कि अवैध हस्तक्षेप को रोका जाय और प्रकरण की स्थलीय अभिलेखीय जांच करा लिया जाय।

निर्देश के बावजूद जगदीश प्रसाद और संगीता देवी का कहना है कि पाण्डेय बाजार डुमरियागंज रोड निवासी राजीव गुप्ता बस्ती खास रेहरवा शंकरदास मंदिर के निकट जबरिया विवादित भूमि पर अवैध निर्माण शुरू करा चुकी है। रोकने पर गाली और देख लेने की धमकी देते हैं। जगदीश प्रसाद और संगीता देवी ने उच्चाधिकारियों से मांग किया है कि तत्काल प्रभाव से अवैध निर्माण रूकवाया जाय और भूमि का स्थलीय जांच के बाद ही निर्माण होने दिया जाय।

यूपी में अब 76 जिले, अधिसूचना जारी, महाकुंभ मेला बना नया जनपद

लखनऊ (आभा)। यूपी में अब 76 जिले हो गए हैं। योगी सरकार के निर्देश पर प्रयागराज में लगने वाले महाकुम्भ से पहले संगम और आसपास के क्षेत्र को महाकुम्भ मेला जिला घोषित कर दिया गया है। शासन के निर्देश पर प्रयागराज के डीएम रविंद्र कुमार मांदड़ ने महाकुम्भ 2025 के आयोजन के लिए महाकुम्भ मेला जिला घोषित कर दिया। इस जिले में संपूर्ण परेड क्षेत्र के साथ ही संगम के आसपास की चार तहसीलों के 67 राजस्व गांवों को शामिल किया गया है। डीएम की ओर से जारी अधिसूचना में इन गांवों का ब्योरा भी दिया गया है।

शासन ने महाकुम्भ मेला क्षेत्र को नया जिला घोषित करने के लिए 25 नवंबर को आदेश भेजा था। महाकुम्भ मेला नया जिला घोषित होने के साथ यूपी में 76 जिले और प्रयागराज मंडल में पांच जिले हो गए। मंडल में प्रयागराज, प्रतापगढ़, कौशाम्बी, फतेहपुर के साथ अब महाकुम्भ मेला जिला शामिल हो गया है।

डीएम ने प्रयागराज मेला प्राधिकरण, प्रयागराज अधिनियम 2017 की धारा 2 (ठ) के तहत मिले अधिकारों का प्रयोग करते हुए महाकुम्भ मेला 2025 के आयोजन के लिए नए जिले की अधिसूचना जारी की है। अधिसूचना के मुताबिक नए जिले में मेलाधिकारी कुम्भ मेला को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 14 (1) और अन्य सुसंगत धाराओं के अंतर्गत एक्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट, जिलाधिकारी एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट एवं उक्त संहिता के अधीन जिला मजिस्ट्रेट के समस्त अधिकार और यूपी राजस्व संहिता 2006 (उत्तर प्रदेश राजस्व संहिता (संशोधन) अधिनियम 2016 की धारा 12 एवं अन्य सुसंगत धाराओं के अंतर्गत उक्त जिले में अतिरिक्त कलेक्टर नियुक्त करते हुए समस्त श्रेणी के मुकदमों में कलेक्टर के समस्त अधिकारों का उपयोग करने और कलेक्टर के समस्त कार्य करने के अधिकार प्राप्त होंगे। डीएम ने इस अधिसूचना को तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया है।

नये जिले में तहसील सदर– कुरेशीपुर उपरहार, कुरेशीपुर कछार, कीडगंज उपरहार, कीडगंज कछार, बराही पट्टी कछार, बम्हन पट्टी कछार, मुस्तफाबा मुनकस्मा उपरहार, मुस्तफाबा मुनकस्मा कछार, अली पट्टी, बस्की उपरहार, बस्की कछार, अल्लापुर बस्की कछार, बघाड़ा जहूरुद्दीन, करनपुर, बघाड़ा बालन, चकशरखां कछार, सादियाबाद उपरहार, सादियाबाद कछार, चांदपुर सलोरी उपरहार, चांदपुर सलोरी कछार, गोविंदपुर उपरहार, पट्टी चिल्ला उपरहार, पट्टी चिल्ला कछार, आराजी बारूदखाना उपरहार, आराजी बारूदखाना कछार।

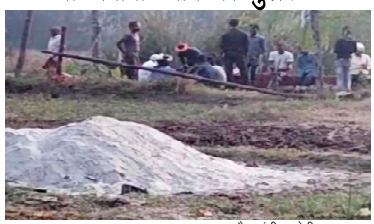

तहसील सोरांव– बेला कछार बारूदखाना, पड़िला, मनसैता। तहसील फूलपुर– बेला सैलाबी कछार, औरहा उपरहार, सिहोरी उपरहार, सिहोरी कछार, इब्राहिमपुर उपरहार, इब्राहिमपुर कछार, एखलासपुर, रसूलपुर उपरहार, रसूलपुर कछार, फतेहपुर, चक जमाल, सोनौटी, बदरा, चक फातमा, जमीन शेरडीह, पूरे सूरदार, झूंसी कोहना, हवेलिया, उस्तापुर महमूदाबाद उपरहार, उस्तापुर महमूदाबाद कछार, छतनाग कछार।

तहसील करछना– मदनुवा उपरहार, मदनुवा कछार, मवैया उपरहार, मवैया कछार, देवरख उपरहार, देवरख कछार, अरैल उपरहार, अरैल कछार, चक सैयद अरब दरवेश, चक अराजी खान आलम, माघोपुर उपरहार, माधोपुर कछार, जहांगीराबाद उपरहार, जहांगीराबाद कछार, महेवा पट्टी पूरब उपरहार, महेवा पट्टी पूरब कछार, महेवा पट्टी पश्चिम कछार, मीरखपुर कछार, संपूर्ण परेड क्षेत्र शामिल है।

अवध ओझा आम आदमी पार्टी में शामिल पटपड़गंज से चुनाव लड़ाने की चर्चा

नई दिल्ली (आभा)। मशहूर शिक्षक और मोटिवेशनल स्पीकर अवधा ओझा ने 'राजनीति की क्लास' में प्रवेश कर लिया है। उन्होंने सोमवार को दिल्ली में आम आदमी पार्टी (आप) की सदस्यता ली। आप के मुखिया अरविंद केरीवाल और दूसरे सबसे बड़े नेता मनीष सिसोदिया की मौजूदगी में श्आपश का दामन थामने वाले अवध ओझा का दिल्ली में विधानसभा चुनाव लड़ना तय माना जा रहा है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अवध ओझा ने चुनाव लड़ने ना लड़ने का फैसला भले ही श्आपश पर छोड़ा, लेकिन सूत्रों की मानें तो ना सिर्फ उन्हें टिकट मिलना पक्का है, बल्कि सीट भी फाइनल हो चुकी है। ओझा को पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया की सीट श्पटपड़गंजश से चुनाव लड़ाया जा सकता। मनीष सिसोदिया को इस बार किसी दूसरी सीट से उतारा जा सकता है। हालांकि, आम आदमी पार्टी की ओर से अभी इस पर कोई आधिकारिक ऐलान नहीं किया गया है।

दरअसल, 10 साल की एंटी इंकबेंसी से निपटने के लिए श्आपश इस बार कई विधायकों के टिकट काट सकती है तो कई बड़े नेताओं की सीटों में बदलाव किया जा सकता है। कथित शराब घोटाल में गिरफ्तारी के बाद मनीष सिसोदिया को भी लंबे समय तक जेल में रहना पड़ा। इस दौरान उनकी विधानसभा क्षेत्र में भी कामकाज प्रभावित हुआ। उनकी गैर–मौजूदगी का फायदा भाजपा ने उठाने की भरसक कोशिश की है।

सूत्रों के मुताबिक, तीन बार के विधायक सिसोदिया के लिए इस बार यह सीट बहुत सुरक्षित नहीं है। पिछले विधानसभा चुनाव में भी उनकी जीत का मार्जिन काफी कम था। भाजपा के रविंद्र सिंह नेगी ने सिसोदिया को कड़ी टक्कर दी थी। 2020 में सिसोदिया महज 3 हजार वोट से जीत हासिल कर पाए थे। पटपड़गंज सीट पर पूर्वांचल और उत्तराखंड के लोगों की अच्छी आबादी है, जिनके बीच भाजपा की पकड़ भी काफी मजबूत है। इसलिए पार्टी ने

इस बार उत्तर प्रदेश के गोंडा से आने वाले अवध ओझा को चेहरा बनाने का फैसला किया है।

अवध ओझा की एक शिक्षक के तौर पर अच्छी लोकप्रियता है। वह युवाओं के बीच काफी मशहूर हैं। ऐसे में पार्टी को उम्मीद है कि वह पटपड़गंज सीट पर पूर्वांचली और युवा वोटर्स को अपने पाले में लाकर जीत हासिल कर सकते हैं। अभी यह साफ नहीं है कि सिसोदिया को किस सीट से उतारा जाएगा। पार्टी उन्हें किसी दूसरी सीट से उतार सकती है। सिसोदिया के अलावा कुछ और बड़े नेताओं की सीट भी बदली जा सकती है। पार्टी के कई ऐसे नेता हैं, जो लगातार तीन बार अपनी सीट पर जीत हासिल कर चुके हैं। ऐसी सीटों पर माहौल को पार्टी खासतौर पर भांपने में जुटी है।

सुप्रीम कोर्ट की किसान आंदोलनकारियों को नसीहत– हाईवे न रोकें

नई दिल्ली (आभा)। सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा और पंजाब को जोड़ने वाले खनौरी बॉर्डर पर आंदोलन कर रहे किसानों को नसीहत दी है। अदालत ने सोमवार को सुनवाई के दौरान किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल से कहा कि आप प्रदर्शनकारी किसानों को समझाएं कि वे राजमार्गों को बाधित न करें और लोगों को सुविधाओं का ध्यान रखें। डल्लेवाल को पुलिस ने खनौरी बॉर्डर से उठा दिया था, लेकिन अब कोर्ट में सुनवाई के दौरान बताया गया कि उन्हें पुलिस ने कथित हिरासत से रिहा कर दिया है। इसके बाद वह एक बार फिर से विरोध प्रदर्शन में शामिल हो गए हैं। उनके साथ कई किसान एमएसपी की गारंटी के लिए कानून बनाने समेत कई मांगों को लेकर आमरण अनशन कर रहे हैं।

डल्लेवाल की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में आप शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन कर सकते हैं लेकिन लोगों को असुविधा नहीं होने दें। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जवल भुयां की बेंच ने कहा कि 26 नवंबर को खनौरी बॉर्डर से डल्लेवाल को उठाया गया था। अब वह फिर से रिहा हो गए हैं और अपने साथियों को समझाते हुए भी दिखे कि वे आमरण अनशन समाप्त कर दें। बेंच ने डल्लेवाल की ओर से पेश वकील गुनिंदर कौर गिल से अदालत ने कहा कि आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि जनता को आंदोलन से असुविधा न हो।

बेंच ने कहा, 'एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में आपको शांतिपूर्ण प्रदर्शन का पूरा अधिकार है, लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जनता को इससे असुविधान हो। आप सभी लोग जानते हैं कि खनौरी बॉर्डर पंजाब के लिए लाइफलाइन की तरह है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि प्रदर्शन सही है या गलत, लेकिन जनता को परेशानी नहीं होनी चाहिए।' जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि डल्लेवाल प्रदर्शनकारियोंको यह समझा सकते हैं कि वे शांतिपूर्ण आंदोलन करें। यह ध्यान रखें कि उनके प्रदर्शन से आम लोगों को कोई परेशानी न हो।

खुले नालों से दुर्घटना का खतरा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सड़क तो चमक जा रही है, लेकिन उसके बगल से गुजरने वाले नालों को सुरक्षित करने का कोई ठोस उपाय नहीं किया जा रहा है। इससे खुले नाले हादसे को दावत दे रहे हैं। शहर से लेकर कस्बों तक में मुख्य मार्गों के नाले ढके नहीं हैं। खुले नाले कभी भी बड़े हादसे हो सकते हैं, जिसको लेकर जिम्मेदारों उदासीन बने हुए हैं। पांडेय बाजार–मेंहदावल रोड से हड़िया ओवरब्रिज तक निकले नाले ढक्कन विहीन हैं। कहीं–कहीं लोग अपने मद से ही नाले पर ढक्कन लगा लिए हैं, शेष जगह खुले हैं। जहां सड़क की क्रासिंग हैं वहां नाले ढके हैं, उस पर पुलिया बना दिए हैं, अन्य जगह खुले ये नाले जोखिम वाले बन गए हैं। इस मार्ग पर चार पहिया वाहन से लेकर बड़े वाहन, दो पहिया और तीन पहिया समेत स्कूली बच्चों का आना–जाना है, लेकिन जिम्मेदार ध्यान नहीं दे रहे हैं। बताते हैं कि इस नाले में एक बच्ची खेलते समय गिर गई थी, परिजन जब तक समझ पाते और निकालते उसकी मृत्यु हो गई थी। उसको लेकर खूब हंगामा हुआ था। जांच हुई लेकिन, आधे–अधूरे नाले को तो पूरा कर दिया गया लेकिन ढकना भूल गए। अंधे मोड़ तक पर संकेतक नहीं है। सड़क मार्ग से नहर भी गुजरी है, यहां भी खतरा है।

शहर के कई सड़कों के बगल में बड़े–बड़े नाले खुले हैं। यहां रेलिंग तो दूर संकेतक तक नहीं लगे हैं। ऐसे में वाहन चालक कभी भी लापरवाही के शिकार हो सकते हैं। इस दिशा में नगर पालिका के साथ ही जिम्मेदार विभाग भी अनदेखी किए हुए हैं और बजट का रोना रो रहे हैं।

नाले को ढकने के लिए कहीं–कहीं ढक्कन तो लगा दिए गए, लेकिन खराब गुणवत्ता के कारण जैसे ही उस पर भार बढ़ता है टूट जाते हैं। इससे वाहन फंस जाते हैं। राहगीर को सांसत झेलनी पड़ती है। यह हाल शहर से लेकर कस्बों तक में बने नालों के ढक्कन हैं।

ईओ नगर पालिका सुनिष्ठा सिंह का कहना है कि शहरी क्षेत्र के नालों का चिह्नीकरण हुआ था। जहां ढक्कन नहीं है उसे ढकने के लिए बोर्ड बैठक में इसे प्रस्तावित किया जाएगा।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 3 दिसम्बर 2024 मंगलवार

सम्पादकीय

बांग्लादेश में हाशिये पर हिन्दू

1971 की भारत पाक जंग के बाद हिंदुस्तान की बदौलत वजूद में आए बंगलादेश में हिंदुओं के साथ बुरा बर्ताव हमारे देश के लिए निरंतर चिंता का सबब बना हुआ है। जनसंख्या के लिहाज से, बंगलादेश भारत और नेपाल के पड़ोसी देशों के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा हिंदू आबादी वाला देश है। बंगलादेश के 64 जिलों में से 61 में हिंदू धर्म दूसरा सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन बंगलादेश में कोई भी हिंदू बहुल जिला नहीं है। वर्तमान बंगलादेश में हिंदू आबादी लगातार जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में घट रही है, 1941 में 28 प्रतिशत से 1971 में बंगलादेश की स्थापना के समय 13.5 प्रतिशत हो गई और 2022 में और कम होकर 7.9 प्रतिशत हो गई । बंगलादेश मुक्ति युद्ध के दौरान उत्पीडन से बचने के लिए लगभग 80 लाख हिंदू भारत के विभिन्न हिस्सों में भाग गए। आजादी के बाद, यह पता चला कि 15 लाख हिंदू भारत में रह गए।

ढाका विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री अबुल बरकत के अनुसार, 1964 से 2013 तक धार्मिक उत्पीडन और भेदभाव के कारण लगभग 11.3 मिलियन हिंदुओं ने बंगलादेश छोड़ दिया। उनके अनुसार औसतन हर दिन 632 हिंदू देश छोड़कर चले गए और सालाना 230,612 हिंदू देश छोड़कर चले गए। पड़ोसी देशों में हिंदुओं पर अत्याचार की कहानी नई नहीं है। वर्ष 1947 में जब भारत का विभाजन हुआ, लाखों की संख्या में हिन्दू और मुसलमानों ने धर्म के आधार पर मुल्क बदला। फिर भी कुछ मुसलमान ऐसे थे, जो भारत में ही रह गए और इसी तरह कुछ हिन्दू पाकिस्तान में रह गए। भारत ने हिन्दू राष्ट्र बनने की बजाय धर्मनिरपेक्ष राज्य बनना पसंद किया, ताकि भारत में रहने वाले अल्पसंख्यक खुद को असुरक्षित न समझें, उन्हें समान अधिकार मिलें और इसके लिए भारत ने अपने संविधान में धर्म चुनने की स्वतंत्रता को मौलिक अधिकारों की सूची में स्थान दिया है।

भारत विभाजन से पहले मुसलमानों की संख्या भारत की कुल आबादी का 10 प्रतिशत थी, जो आज बढ़कर लगभग 15 प्रतिशत हो गई है। लेकिन पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं की किस्मत भारतीय मुसलमानों जैसी न तब थी, न आज है। पाकिस्तान में बसे हिन्दुओं में से लगभग 96 फीसदी सिंध प्रान्त में ही रहते हैं। वर्ष 1956 में पाकिस्तान का संविधान बना और पाकिस्तान प्रगतिशील और उदारवादी विचारधाराओं को त्यागकर कट्टर देश बन गया, और तभी से अल्पसंख्यक हिन्दुओं का वहां रहना दुश्वार हो गया। बंगलादेश में भी यह कहानी दोहराई जा रही है।देखने में आया है कि पाकिस्तान की जब भी भारत के आगे दाल नहीं गलती तो सभी घटनाओं का दुष्परिणाम पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं को भुगतना पड़ता है । जिया–उल–हक की तानाशाही से लेकर अब तालिबान के अत्याचारों तक पाकिस्तानी हिन्दुओं का जीवन दूभर ही रहा है।

कहते हैं कि आजादी के वक्त पाकिस्तान में कुल 428 मंदिर थे, जिनमें से अब सिर्फ 26 ही बचे हैं। पाकिस्तान में ज्यादातर हिन्दू मंदिर या गिरा दिए गए या उन्हें होटल बना दिया गया है। पाकिस्तान के नैशनल कमिशन फॉर जस्टिस एंड पीस की वर्ष 2012 की रिपोर्ट के मुताबिक 74 प्रतिशत हिन्दू महिलाएं यौन शोषण का शिकार होती हैं। पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग की वर्ष 2012 की रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में हर महीने 20 से 25 हिन्दू लड़कियों का अपहरण होता है और जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराया जाता है। जब पाकिस्तान में जीने के लिए हिन्दू अल्पसंख्यकों की अनुकूल स्थिति नहीं रही, तो बंगलादेश इसका अपवाद कैसे साबित होगा और आज यही कुछ हिंदुओं के साथ बंगलादेश में देखने को मिल रहा है।

बंगलादेश की वर्तमान सरकार भारत विरोधी सोच वाली है जिससे यूनुस भी अछूते नहीं हैं। अगर वे भारत हितैषी दिखना भी चाहें तो वह ऐसा कर नहीं सकते क्योंकि हसीना सरकार के गिरने का बड़ा कारण उनका भारत हितैषी नजरिया था। वरना वहां सुप्रीमकोर्ट का रिजर्वेशन पर फैसला आने के बाद उनको अपदस्थ करने का कोई कारण ही नहीं था? रिजर्वेशन के नाम पर वहां के युवाओं को हथियार के रूप में बंगलादेशी कट्टरपंथियों ने इस्तेमाल किया और हसीना सरकार को गिरा दिया। ये लोग ऐसे अवसर की तलाश में ही बैठे थे। खेद की बात है कि जिस बंगलादेश को आजाद कराने के लिए हिन्दुस्तानी यानी भारतीय फौजों ने मुकाबला किया था, इसी भारत के बहुसंख्यकों को अब वहां के हुक्मरान अपना दुश्मन क्यों मानते हैं?

सियासत के नये समीकरण में प्रियंका गांधी

—ज्योति मल्होत्रा—

पिछले सप्ताह महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की करारी हार के बाद पार्टी में छाई गहरी खामोशी आपको बताती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा देश भर में सत्ता क्यों कायम रखे हुए हैं। एक शब्द में कहें तो ऐसा इसलिए क्योंकि कांग्रेस उन्हें इसके लिए सक्षम बनाती है।

पिछले छह–सात दिनों से खूब खबरें चली कि महाराष्ट्र के महायुति गठबंधन के भीतर इस मुद्दे पर खींचतान और दबाव बना हुआ है कि अगला मुख्यमंत्री कौन होगा, देवेंद्र फडणवीस या एकनाथ शिंदे। इसके विपरीत, कांग्रेस फिर से करवट लेकर सोने चली गई लगती है। एमवीए गठबंधन से उद्धव ठाकरे द्वारा किनारा करने की चर्चा राज्य में हो रही है, लेकिन गठबंधन के घटकों के बीच दरार और मनमुटाव का शोर वास्तव में चुनाव परिणाम आने से पहले ही मचना शुरू हो गया था दृ जब वे इस मुद्दे पर बहस करने लगे थे कि महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री कौन होगा?

निश्चित रूप से, यह एक अनूठी स्थिति है। कांग्रेस और राहुल गांधी नियमित रूप से भाजपा पर मोदी की छवि बतौर देवतुल्य व्यक्ति पेश करने का आरोप लगाते हैं दृ खुद प्रधानमंत्री ने लोकसभा चुनाव से पहले वाराणसी में एक चौनल को दिए साक्षात्कार में इस तथ्य को स्वीकार किया था, जब उन्होंने कहा रू 'मुझे यकीन है कि भगवान ने (मुझे) भेजा है, क्योंकि इतनी ऊर्जा मेरे जैविक शरीर में तो नहीं हो सकती थी'। लेकिन तथ्य यह है कि भले ही कांग्रेस एक के बाद एक चुनाव हारती जा रही है दृ झारखंड नियम की बजाय अपवाद है दृ फिर भी उसने अपने अंदर झांकने से आंखें मूंद रखी हैं।

आश्चर्यजनक तथ्य यह बना हुआ है कि हार के पीछे राहुल गांधी पर सीधे–सीधे अंगुली उठाने से कांग्रेस पार्टी बचती है और यह बात मोदी और भाजपा को राज्य–दर–राज्य खुद को मजबूत करने का मौका प्रदान करती है। जब पिछली गर्मियों में भाजपा संसद में अपना खुद का पूर्ण बहुमत नहीं ले पाई थी, तो उसने बारीकी से जांच की कि गलती कहां रही, जिसमें यह भी शामिल था कि आरएसएस ने मदद क्यों नहीं की। इसके बाद हरियाणा और महाराष्ट्र में हुए चुनावों में भूल से सबक लेना सुनिश्चित किया गया दृ इसलिए हरियाणा में प्रत्येक विधानसभा सीट पर माइक्रो मैनेजमेंट की गयी और अति आत्मविश्वासी बनी कांग्रेस के पैरों तले से जमीन खींच ली और महाराष्ट्र में 'लाड़ली–बहना' जैसी योजनाओं की बदौलत जीत हासिल की, जो महिलाओं के बैंक खाते में सीधे पैसे डालने की गारंटी देती है।

इसके विपरीत, कांग्रेस ईवीएम को दोष देने में लगी रही और अपनी विफलता के पीछे 'बड़े पैमाने पर धांधली' को जिम्मेदार ठहराया। तमाम अच्छे नेताओं की तरह विफलता को स्वीकार करने के बजाय राहुल वायनाड से अपनी करिश्माई बहन की जीत मनाने में अगुवाई करते नजर आए दृश्य मनोहारी था,खासकर जब वह युवा महिला पारंपरिक केरल कसावु साड़ी में संसद में शपथ लेने पहुंची और त्रुटिहीन हिंदी में सांसद के रूप में सौगंध उठाई। लेकिन अब वास्तविक दृश्य देखिये। सदन में अब तीन गांधी हैं– राज्यसभा में मां सोनिया तो लोकसभा में उनके बच्चे राहुल और प्रियंका, राहुल उत्तर प्रदेश के दिल रायबरेली से सांसद, तो प्रियंका दक्षिण भारत के खूबसूरत पहाड़ी जिले वायनाड से। लेकिन यहां कोई मुगालता न रहे, इस जीत से पारिवारिक जागीर रूपी कांग्रेस पर गांधियों की पकड़ अब और भी मजबूत हो गई है।

वंशवाद विरोधी आवाजें उठना भारतीय राजनीति में अब लंबे समय से बंद हो चुकी हैंदृ आज न केवल कांग्रेस बल्कि हर राजनीतिक दल,नेता–नेत्रियों के बेटे–बेटियों से भरा पड़ा है, जो कथित तौर पर अच्छाई की लड़ाई लड़ रहे हैं। इसके पीछे वे कौन से तर्क देंगे, उनसे अब हम सब अच्छी तरह वाकिफ हैं। भारत के लोग इतने अक्लमंद हैं कि अगर आप उनके लिए पर्याप्त मेहनत नहीं करते तो वे आपको अपना नेता स्वीकार नहीं करेंगे, भले ही आपकी बपौती कितनी भी बनती हो। वंशवाद का आरोप अब कांग्रेस की समस्या नहीं रही। यह तथ्य है कि गांधी परिवार ने एक 'मुखौटे' पर जोर देना जारी रखा हुआ है, मुखौटा पहने उस आदमी की डोर पीछे से इस परिवार के हाथ में है। बतौर सांसद अपनी पदोन्नति के साथ, प्रियंका कठपुतली चलाने वालों की श्रेणी में शामिल हो गई हैं। उनकी मां, एक असाधारण महिला, जिन्होंने साल 1991 की गर्मियों में अपने पति की दुखद और जघन्य हत्या के बाद बनी परिस्थिति में कांग्रेस के कुनबे को एकजुट बनाए रखा और मनमोहन सिंह के उल्लेखनीय नेतृत्व में कांग्रेस 10 साल सत्ता में रही। वे अब सार्वजनिक जीवन से दूर हो गई हैं, उनकी बेटी ने आगे आकर मोर्चा संभाला है।

यह अप्रासंगिक है कि कमान किसके हाथ में दी गई है, सोनिया के बेटे को या बेटी को। सदन में बतौर नए गांधी, प्रियंका की अतुलनीय चुंबकीय उपस्थिति पर्याप्त चेतावनी है कि गांधियों को हलके में लेना आसान न होगा। यही कारण है कि प्रियंका का इतना महत्व है। वे पार्टी में जोश भरने और राजनीति में हलचल मचाने का माद्दा रखती हैं। तय है जब वे संसद में बोलेंगी तो माहौल में बिजली अवश्य दौड़ जाएगी। हालांकि, इस बात की गुंजाइश कम है कि कांग्रेस की डोलती नैया को वे पार लगा पाएंगी, क्योंकि पतवार भाई के हाथ में है। इसका मतलब यह है कि राहुल के नेतृत्व वाली कांग्रेस ने महाराष्ट्र और हरियाणा, दोनों जगह, गठबंधन को मिली वोटों का हिस्सा घटाया है। या फिर भाई–बहन की जोड़ी इंडिया गठबंधन में पड़ी दरार को लेकर सहज है दृ जैसा कि तृणमूल कांग्रेस ने अनुरोध किया है कि संसद को इस शीतकालीन सत्र में काम करने दिया जाए दृ बजाय इसके कि अडानी मुद्दे पर राहुल अड़े रहें।

सब ठीक होता यदि कांग्रेस कुछ राज्यों में जीत जाती दृ आखिरकार, हर कोई विजेता को पसंद करता है। लेकिन जब पार्टी लगातार हार रही हो, तो सवाल यह पैदा होता है कि गांधी परिवार इतना खास क्यों है कि उसे चुनौती नहीं दी जा सकती दृ जैसा कि जी–23 ने एक बार सोचकर प्रयास किया, लेकिन बात बनी नहीं दृ इसका जवाब अभी भी ठीक से नहीं मिल पाया।निश्चित रूप से, इस घटनाक्रम से मोदी से ज्यादा कोई और खुश नहीं होगा। वे जानते हैं कि जब वे पार्टी के अंदर लोकतंत्र की कमी के लिए कांग्रेस पर तंज कसते हैं, तो लाखों भारतीयों के दिलों को छूते हैं। वे जानते हैं, और देश भी जानता है, कि 'इंडिया इज इंदिरा' के दिन बहुत पहले लद चुके हैं। और यदि गांधी परिवार जिम्मेदारी लेने से इनकार करता है, तो यह पुरानी और बड़ी पार्टी धीरे–धीरे खत्म हो जाएगी। एक समय,पुराने अच्छे दिनों में, प्रियंका को कांग्रेस पार्टी का 'ब्रह्मास्त्र' कहा जाता था। सवाल यह है कि क्या ऐसा हथियार आज की राजनीति में कुछ कर दिखाएगा।–लेखिका 'द ट्रिब्यून' की प्रधान संपादक हैं।

कैसे मजबूत बने सहकारिता आंदोलन

— प्रहलाद सबनानी—

भारत में आर्थिक विकास को गति देने के उद्देश्य से सहकारिता आंदोलन को सफल बनाना बहुत जरूरी है। वैसे तो हमारे देश में सहकारिता आंदोलन की शुरुआत वर्ष 1904 से हुई है एवं तब से आज तक सहकारी क्षेत्र में लाखों समितियों की स्थापना हुई है। कुछ अत्यधिक सफल रही हैं, जैसे अमूल डेयरी, परंतु इस प्रकार की सफलता की कहानियां बहुत कम ही रही हैं। कहा जाता है कि देश में सहकारिता आंदोलन को जिस तरह से सफल होना चाहिए था, वैसा हुआ नहीं है। बल्कि, भारत में सहकारिता आंदोलन में कई प्रकार की कमियां ही दिखाई दी हैं। देश की अर्थव्यवस्था को यदि 5 लाख करोड़ अमेरिकी डालर के आकार का बनाना है तो देश में सहकारिता आंदोलन को भी सफल बनाना ही होगा। इस दृष्टि से केंद्र सरकार द्वारा एक नए सहकारिता मंत्रालय का गठन भी किया गया है। विशेष रूप से गठित किए गए इस सहकारिता मंत्रालय से अब "सहकार से समृद्धि" की परिकल्पना के साकार होने की उम्मीद भी की जा रही है। भारत में सहकारिता आंदोलन का यदि सहकारिता की संरचना की दृष्टि से आंकलन किया जाय तो ध्यान में आता है कि देश में लगभग 8.5 लाख से अधिक सहकारी साख समितियां कार्यरत हैं। इन समितियों में कुल सदस्य संख्या लगभग 28 करोड़ है। हमारे देश में 55 किस्मों की सहकारी समितियां विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। जैसे, देश में 1.5 लाख प्राथमिक दुग्ध सहकारी समितियां कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त 93,000 प्राथमिक कृषि सहकारी साख समितियां कार्यरत हैं। ये मुख्य रूप से ग्रामीण इलाकों में कार्य करती हैं। इन दोनों प्रकार की लगभग 2.5 लाख सहकारी समितियां ग्रामीण इलाकों को अपनी कर्मभूमि बनाकर इन इलाकों की 75 प्रतिशत जनसंख्या को अपने दायरे में लिए हुए है। उक्त के अलावा देश में सहकारी साख समितियां भी कार्यरत हैं और यह तीन प्रकार की हैं। एक तो वे जो अपनी सेवाएं शहरी इलाकों में प्रदान कर रही हैं। दूसरी वे हैं जो ग्रामीण इलाकों में तो अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं, परंतु कृषि क्षेत्र में ऋण प्रदान नहीं करती हैं। तीसरी वे हैं जो उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों एवं कर्मचारियों की वित्त सम्बंधी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करती हैं। इसी प्रकार देश में महिला सहकारी साख समितियां भी कार्यरत हैं। इनकी संख्या भी लगभग एक लाख है। मछली पालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मछली सहकारी साख समितियां भी स्थापित की गई हैं, इनकी संख्या कुछ कम है। ये समितियां मुख्यतः देश में समुद्र के आसपास के इलाकों में स्थापित की गई हैं। देश में बुनकर सहकारी साख समितियां भी गठित की गई हैं, इनकी संख्या भी लगभग 35,000 है। इसके अतिरिक्त हाउसिंग सहकारी समितियां भी कार्यरत हैं।

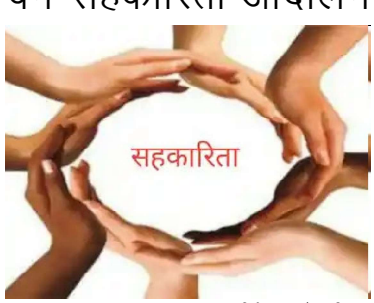

उक्तवर्णित विभिन क्षेत्रों में कार्यरत सहकारी समितियों के अतिरिक्त देश में सहकारी क्षेत्र में तीन प्रकार के बैंक भी कार्यरत हैं। एक, प्राथमिक शहरी सहकारी बैंक जिनकी संख्या 1550 है और ये देश के लगभग सभी जिलों में कार्यरत हैं। दूसरे, 300 जिला सहकारी बैंक कार्यरत हैं एवं तीसरे, प्रत्येक राज्य में एपेक्स सहकारी बैंक भी बनाए गए हैं। उक्त समस्त आंकडें वर्ष 2021–22 तक के हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हमारे देश में सहकारी आंदोलन की जड़ें बहुत गहरी हैं। दुग्ध क्षेत्र में अमूल सहकारी समिती लगभग 70 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई है, जिसे आज भी सहकारी क्षेत्र की सबसे बड़ी सफलता के रूप में गिना जाता है। सहकारी क्षेत्र में स्थापित की गई समितियों द्वारा रोजगार के कई नए अवसर निर्मित किए गए हैं। सहकारी क्षेत्र में एक विशेषता यह पाई जाती है कि इन समितियों में सामान्यतः निर्णय सभी सदस्यों द्वारा मिलकर लिए जाते हैं। सहकारी क्षेत्र देश के आर्थिक विकास में अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। परंतु इस क्षेत्र में बहुत सारी चुनौतियां भी रही हैं। जैसे, सहकारी बैंकों की कार्य प्रणाली को दिशा देने एवं इनके कार्यों को प्रभावशाली तरीके से नियंत्रित करने के लिए अपेक्स स्तर पर कोई संस्थान नहीं है। जिस प्रकार अन्य बैकों पर भारतीय रिजर्व बैंक एवं अन्य वित्तीय संस्थानों का नियंत्रण रहता है ऐसा सहकारी क्षेत्र के बैकों पर नहीं है। इसीलिए सहकारी क्षेत्र के बैंकों की कार्य पद्धति पर हमेशा से ही आरोप लगते रहे हैं एवं कई तरह की धोखेबाजी की घटनाएं समय समय पर उजागर होती रही हैं। इसके विपरीत सरकारी क्षेत्र के बैंकों का प्रबंधन बहुत पेशेवर, अनुभवी एवं सक्रिय रहा है। ये बैंक जोखिम प्रबंधन की पेशेवर नीतियों पर चलते आए हैं जिसके कारण इन बैंकों की विकास यात्रा अनुकरणीय रही है। सहकारी क्षेत्र के बैंकों में पेशेवर प्रबंधन का अभाव रहा है एवं ये बैंक पूंजी बाजार से पूंजी जुटा पाने में भी सफल नहीं रहे हैं। अभी तक चूंकि सहकारी क्षेत्र के संस्थानों को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी तंत्र का अभाव था केंद्र सरकार द्वारा किए गए नए मंत्रालय के गठन के बाद सहकारी क्षेत्र के संस्थानों को नियंत्रित करने में कसावट आएगी एवं इन संस्थानों का प्रबंधन भी पेशेवर बन जाएगा जिसके चलते इन संस्थानों की कार्य प्रणाली में भी निश्चित ही सुधार होगा।

सहकारी क्षेत्र पर आधरित आर्थिक मोडेल के कई लाभ हैं तो कई प्रकार की चुनौतियां भी हैं। मुख्य चुनौतियां ग्रामीण इलाकों में कार्य कर रही जिला केंद्रीय सहकारी बैकों की शाखाओं के सामने हैं। इन बैंकों द्वारा ऋण प्रदान करने की स्कीम बहुत पुरानी हैं एवं समय के साथ इनमें परिवर्तन नहीं किया जा सका है। जबकि अब तो ग्रामीण क्षेत्रों में आय का स्वरूप ही बदल गया है। ग्रामीण इलाकों में अब केवल 35 प्रतिशत आय कृषि आधारित कार्य से होती है शेष 65 प्रतिशत आय गैर कृषि आधारित कार्यों से होती है। अतः ग्रामीण इलाकों में कार्य कर रहे इन बैकों को अब नए व्यवसाय माडल खड़े करने होंगे। अब केवल कृषि व्यवसाय आधारित ऋण प्रदान करने वाली योजनाओं से काम चलने वाला नहीं है।

मंदिर–मस्जिद के विवाद में उलझा देश

—शाजिया इल्मी—

संभल में हुई आगजनी की घटना के बावजूद, सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय द्वारा उचित आदेश पारित किए जाने तक निचली अदालत द्वारा दिए गए सर्वेक्षण पर रोक लगा दी है। अजमेर में एक स्थानीय अदालत द्वारा एक याचिका पर सुनवाई करने के निर्णय से एक अन्य धार्मिक फर्म को झटका लगने का खतरा है। सूफी संत मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के नीचे एक शिव मंदिर होने का दावा करते हुए याचिका में सर्वेक्षण और अजमेर दरगाह पर हिंदुओं को पूजा करने का अधिकार देने की मांग की गई है। याचिकाकर्त्ता, हिंदू सेना के विष्णु गुप्ता, जिनके पास झूठी शिकायतों का एक लंबा इतिहास है, ने दरगाह को संकट मोचन महादेव मंदिर घोषित करने का तर्क दिया है। काश गुप्ता ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के सरसंघचालक मोहन भागवत जी की बातों पर ध्यान दिया होता, जिन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि हर मस्जिद में 'शिवलिंग' खोजने और हर दिन एक नया विवाद शुरू करने की आवश्यकता नहीं है।

जून 2022 में, उन्होंने कहा था कि अब ज्ञानवापी मस्जिद (वाराणसी में) का मुद्दा चल रहा है। इतिहास है, जिसे हम बदल नहीं सकते। वह इतिहास हमने नहीं बनाया है, न ही आज के हिंदुओं या मुसलमानों ने। यह उस समय हुआ जब इस्लाम आक्रमणकारियों के साथ भारत में आया था। आक्रमण के दौरान, स्वतंत्रता चाहने वाले लोगों के धैर्य को कमजोर करने के लिए मंदिरों को नष्ट कर दिया गया था। ऐसे हजारों मंदिर हैं। पिछले कुछ समय से अजमेर दरगाह कुछ कट्टरपंथी समूहों के लिए विवाद का विषय रही है। यह कुछ ऐसे लोगों द्वारा हास्यास्पद दावों का विषय रही है जो स्पष्ट रूप से सूफी विचारधारा के इतिहास और महत्व को नहीं समझते हैं। विडंबना यह है कि ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की पवित्र दरगाह को ङ्क्षहदुओं द्वारा उतना ही सम्मान दिया जाता है जितना मुसलमानों द्वारा। दरगाह बाजार में 75 प्रतिशत से अधिक दुकानें और होटल हिंदुओं के स्वामित्व में हैं। जवाहरलाल नेहरू से लेकर नरेंद्र मोदी तक, सभी प्रधानमंत्रियों ने उर्स के अवसर पर पवित्र चादर भेजी है।

बाबरी मस्जिद, ज्ञानवापी और संभल के विवादों के बाद, अजमेर 2 समुदायों के शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के ताने–बाने पर सबसे नया तनाव है। हालांकि, जहां अन्य विवादित स्थल मस्जिद थे, वहीं यह एक प्रसिद्ध सूफी दरगाह है। मस्जिद और दरगाह के बीच मुख्य अंतरों में से एक यह है कि मस्जिद मुसलमानों के लिए इबादत की जगह होती है जहां आस्तिक सजदा करते हैं, यानी अल्लाह को सजदा करते हैं, जबकि दरगाह वह जगह होती है जहां श्रद्धेय सूफी संतों के लिए दरगाह बनाई जाती है। यह पहली बार नहीं है कि किसी सूफी दरगाह को खतरा पहुंचा है। सूफी संप्रदायों या सिलसिलों को रूढिध्वादी धर्मशास्त्र के विपरीत माना जाता है, यही कारण है कि सदियों से उन्हें सताया जाता रहा है।

सूफीवाद इस्लामी विचार का तपस्वी, रहस्यवादी रूप है, जिसके गूढ़ रूप सला–सुन्नी विभाजन से परे, राजनीतिक सीमाओं, आर्थिक वर्गों, भाषाओं और धर्मों तक फैले हुए हैं। अपने बढ़ते प्रभाव क्षेत्र से खतरे में पड़े सूफियों और उनकी दरगाहों पर धार्मिक इस्लामी विचार के सभी स्कूलों ने हमला किया है। वहाबी, देवबंदी, सलाफी और इस्लामी पुनरुत्थानवादी संतों और सूफी प्रथाओं की पूजा को बहुदेववादी मानते हैं। अफगानिस्तान और ईरान से लेकर तुर्की और आज के पाकिस्तान तक, सूफी संप्रदायों को अभी भी भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। भारत में भी देवबंदी संप्रदाय ने अक्सर दरगाह वालों की ङ्क्षनदा की है, कई बार तो उन्हें धार्मिक वैधता देने से भी इंकार कर दिया है। यह मानना आसान है कि भारत में आखिरी सूफी शहीद सरमद काशानी को कट्टरपंथी औरंगजेब ने मरवा दिया था।अजमेर, जहां बादशाह अकबर ने 17 से ज्यादा बार यात्रा की थी, उनके पड़पौत्र दारा शिकोह का जन्मस्थान भी था, जो शाहजहां के उत्तराधिकारी थे। हालांकि, दारा शिकोह को 1659 में फांसी दे दी गई थी।

अपने भाई औरंगजेब के आदेश पर, बमुश्किल 2 साल बाद, दारा शिकोह के करीबी विश्वासपात्र सरमद का औरंगजेब के आदमियों ने जामा मस्जिद की सीढियों पर सिर कलम कर दिया था। सरमद को ईशनिंदा के आरोप में फांसी दी गई थी, लेकिन उन्हें आज भी संत माना जाता है और जामा मस्जिद के पास उनकी मजार सूफी तीर्थयात्रा का एक प्रेरणादायक स्थान बनी हुई है। यद्यपि रहस्यवादी दारा शिकोह की महानतम साहित्यिक विरासत सिर–ए–अकबर या 'महान रहस्य' थी, जो उपनिषदों का फारसी अनुवाद था, यह उनका मजमा–उल–बहरीन या 'दो समुद्रों का संगम' था, जो एकता पर पहला ग्रंथ था, जिसने एक प्रबुद्ध सफलता में सूफीवाद और वेदांत के बीच समानता की खोज की। मोहन भागवत की सलाह को गंभीरता से सुनने के अलावा विष्णु गुप्ता जैसे लोग दारा शिकोह की इस अंतर्दृष्टि से भी सीख सकते हैं कि इस्लाम और हिंदू धर्म में कोई बुनियादी अंतर नहीं है।

उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि प्रत्येक धर्म के विद्वान अपने–अपने धर्मों की संरचनाओं में इतने उलझे हुए थे कि उन्हें इस एक महत्वपूर्ण दार्शनिक सत्य का एहसास नहीं हुआ। शायद सबसे महत्वपूर्ण यह कि दोनों धर्म मूलतरू एक ही हैं। इसलिए यह आवश्यक था कि उन्हें इस महान अंतर्दृष्टि से अवगत कराया जाए। समावेशी विकास के पथ पर अग्रसर भारत सांप्रदायिक उथल–पुथल और व्यवधानों से मुक्त हो सकता है। धार्मिक संघर्ष सामाजिक प्रगति और आर्थिक विकास के विचार के विपरीत है। असभ्य धार्मिक द्वेष को रोकना होगा, इससे पहले कि यह हमारी सभ्यतागत लोकाचार की सहज आध्यात्मिकता को नष्ट कर दे। कल के भारत को अस्थिर और पटरी से उतारने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

(लेखिका भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं।) (साभार एक्सप्रेस न्यूज)

पुलिस ने लिया सुरक्षा का जायजा

संवाददाता–श्रावस्ती। शांति व कानून व्यवस्था मुकम्मल रखने के लिए पुलिस की ओर से नियमित गश्त कर लोगों को सुरक्षा का एहसास कराया जा रहा है। एसपी घनश्याम चौरसिया के निर्देशन में सोमवार को सभी थाना क्षेत्रों में थाना व चौकी प्रभारिया ने पुलिस टीम के साथ पैदल गश्त कर लोगों को सुरक्षा का एहसास दिलाया। लोगों से बातचीत कर समस्या होने से पुलिस को सूचना देने की सलाह दी।

सड़क हादसे में घायल वृद्ध की इलाज के दौरान मौत

संवाददाता–बहराइच। लखनऊ मेडिकल कालेज में इलाज के दौरान सोमवार सुबह सड़क दुर्घटना में घायल बुजुर्ग की मौत हो गई। उनका शव पैतृक गांव लाया जाएगा। खैरीघाट थाने के लौकिहा के मजरे पंडित पुरवा निवासी कन्हैयी लाल शुक्ला पुत्र राम जियावन शुक्ला को 25 नवम्बर को जब वह साइकिल से कल्पीपारा कालोनी की ओर जा रहे थे। मिल के पास किसी तेज रफ्तार वाहन की टक्कर से घायल हो गए थे।

जिला अस्पताल ले जाने पर चिकित्सकों ने प्राथमिक इलाज कर लखनऊ मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया था। सोमवार सुबह लखनऊ में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

बिना प्रयोगशाला के विज्ञान में महारत हासिल कर रही जीआईसी की बेटियां

संवाददाता–बलरामपुर। माध्यमिक शिक्षा परिषद का हाई स्कूल व इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षाएं फरवरी महीने में प्रस्तावित है। परीक्षा के पूर्व इंटरमीडिएट के साइंस छात्रों की प्रयोगात्मक परीक्षाएं जल्द ही शुरू होने वाली हैं। प्रयोगात्मक परीक्षा के पूर्व जिले के सहायता प्राप्त एवं राजकीय इंटर कॉलेजों के प्रयोगशाला पर गौर करें तो अधिकांश विज्ञान लैब बीमार हालत में है। वर्षों पूर्व बनाए गए प्रयोगशाला की हालत जर्जर है। कुछ इंटर कॉलेज में सालों साल प्रयोगशाला से विद्यार्थी दूर रहकर बोर्ड परीक्षा देने को मजबूर हैं। जहां प्रयोगशालाएं हैं भी वहां पर उपकरण एवं रासायनिक पदार्थ भी सिर्फ कोरम पूरा करने वाले हैं।

जिले में शासन से सहायता प्राप्त 19 माध्यमिक इंटर कॉलेज जबकि 18 राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चल रहे हैं। इन विद्यालयों में बच्चों को रसायन विज्ञान भौतिक विज्ञान एवं जीव विज्ञान की प्रयोगशाला के लिए कहीं उपकरण की कमी है तो कहीं प्रयोगशाला जर्जर हालत में होने से विद्यार्थियों को लाभ नहीं मिल पा रहा है। कोरम पूरा करने के लिए इन विद्यालयों में प्रयोगशालाएं संचालित की जा रही है। सहायता प्राप्त स्कूलों में प्रयोगशाला के नाम पर न तो कोई फंड है और न ही विद्यार्थियों से शुल्क लेने की व्यवस्था। ऐसे में प्रयोगशाला में उपकरण एवं रासायनिक पदार्थ आए तो कहां से। हालांकि विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं संबंधित विषयों के शिक्षक सब कुछ होने का दावा कर रहे हैं। लेकिन हकीकत में मौके पर प्रयोगशाला में पानी का कनेक्शन तक नहीं है। सिर्फ कोरम पूरा करने के लिए उपकरण रखे हुए हैं। अधिकांश स्कूलों में प्रयोगशाला के उपकरण बंद अलमारी की शोभा बढ़ा रहे हैं। जब कोई जांच आदि होता है तो उन्हें बाहर निकाल कर प्रयोग करके फिर से अलमारी में बंद कर दिया जाता है। इस बार माध्यमिक शिक्षा परिषद से वर्ष 2025 के लिए 58 स्कूलों को यूपी बोर्ड परीक्षा का केंद्र बनाया गया है। चर्चा है कि सरकारी स्कूलों में सालों साल प्रयोगशाला बंद रहता है। बिना उपकरण एवं संसाधनों की अनुपलब्धता के बाद भी विद्यार्थियों को प्रैक्टिकल में निपुण करने का दावा किया जा रहा है। इसको लेकर हिंदुस्तान ने स्कूलों की हड़ताल की तो प्रयोगशाला की हकीकत सामने आई।

मृदुला आनंद, डीआईओएस ने कहा कि जिले में 19 सहायता प्राप्त एवं 22 राजकीय इंटर कॉलेज सहित राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संचालित है। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्रयोगशाला की व्यवस्था की गई है विद्यालयों के प्रयोगशाला में फंड की समस्या माध्यमिक सहायता प्राप्त स्कूलों में है। इस समस्या का समाधान किया जा रहा है। छात्र–छात्राओं को प्रयोगात्मक जानकारी मिले यही विभाग का प्रयास है।

घोला नदी के किनारे चहलकदमी करते दिखा तेंदुआ, दहशत

संवाददाता–महराजगंज। ठूठीबारी के मरचहवा टोले के पास घोला नदी के किनारे तेंदुआ दिखने से लोग दहशत में हैं। सोमवार की सुबह कुछ लोगों ने जंगल से निकलकर आबादी की ओर आए इस तेंदुए को चहलकदमी करते देख शोर मचाया। इसी बीच तेंदुए के चहलकदमी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल होने लगा। इससे सोमवार को लोग अकेले बाहर नदी की ओर नहीं गए। वन विभाग की सूचना दी गई। 35 सेकंड के वायरल इस वीडियो में सोहगीबरवा वन्य जीव प्रभाग से भटक कर आबादी की ओर तेंदुए के आने की बात कही जा रही है। सोमवार की सुबह मरचहवा गांव के घोला नदी छठ घाट के पूर्वी छोर पर नदी किनारे चहल कदमी करते हुए एक तेंदुआ वीडियो में दिख रहा है। इसके बाद ग्रामीणों में दहशत फैल गयी है। ग्रामीणों को आशंका है कि तेंदुआ गन्ने के खेत में छिपा हो सकता है। इस डर से किसान खेतों की तरफ जाने से कतराने लगे हैं।

ठूठीबारी के टोला मरचहवा निवासी सलमान, जगदीश आदि लोगों ने बताया कि सोमवार की सुबह करीब सात बजे दैनिक क्रिया के लिए नदी की तरफ जाते समय अचानक तेंदुआ दिखा। तेंदुआ घोला नदी के पूर्वी छोर पर घूम रहा था। उसे देख कुछ लोगों ने शोर मचाया। इस पर आसपास के तमाम लोग इकट्ठा हो गए। ग्रामीणों ने तत्काल इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने लोगों को अलर्ट रहने को कहा। साथ ही पुलिस ने इसकी सूचना वन विभाग के दे दी है।

मचरहवा के पास तेंदुए के निकलने की सूचना मिली है। मौके पर वन विभाग की टीम को भेजा जा रहा है। लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी जा रही है।

युग निर्माता हैं शिक्षक, छात्र भाग्यविधाता –बावन सिंह

संवाददाता–गोण्डा। सोमवार को प्राथमिक विद्यालय शाहजोत के परिसर में परिषदीय शिक्षकों की एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यशाला में शिक्षकों से संवाद करते हुए विधायक बावन सिंह ने कहा कि युग निर्माता शिक्षक ही हैं और देश के भाग्यविधाता छात्र। विधायक ने कहा कि हमें महान शिक्षकों से सीखना चाहिए। विषय वस्तु को छात्रों के बीच कैसे ले जाना है। इसके लिए शिक्षकों का उन्मुखीकरण अति आवश्यक है। भाजपा नेता भवानीभीख शुक्ल ने कहा प्रत्येक सफल व्यक्ति के पीछे एक कुशल शिक्षक का ही हाथ होता है। खंड शिक्षा अधिकारी सीमा पांडे ने बताया कि कार्यशाला में शिक्षकों के बीच निपुण लक्ष्य, प्रेरणा व कायाकल्प जैसे मूल विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। अन्य शिक्षकों ने अपने विचार भी साझा किए। उन्मुखीकरण कार्यशाला में शिक्षकों के अतिरिक्त उमापति त्रिपाठी, अमर शुक्ल, लवकेश यादव, बीरेंद्र मिश्र, रवि तिवारी, शेख शऊद, साकेत, अरुण सिंह सहित अन्य शामिल रहे।

पुण्य तिथि पर सम्मानित किए गए मेधावी छात्र– छात्राएं

संवाददाता–बहराइच। जन–जन के प्रेरणा स्रोत ठा. हुकुम सिंह की पुण्यतिथि पर हुकुम सिंह इंटर कॉलेज कैसरगंज में ब्लॉक प्रमुख संदीप कुमार सिंह विसेन की ओर से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य डॉ. प्रज्ञा त्रिपाठी और विधानसभा संयोजक गौरव वर्मा उपस्थित रहे। सभा की शुरुआत स्व. ठाकुर हुकुम सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई। उपस्थित लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

एमएलसी ने कहा कि ठाकुर हुकुम सिंह ने समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी दूरदर्शिता और नेतृत्व क्षमता आज भी लोगों को प्रेरणा देती है। वक्ताओं ने उनके द्वारा स्थापित संस्थानों और विकास कार्यों पर प्रकाश डाला। सभा में मेधावी– छात्र छात्राओं को पुरस्कार वितरित कर उनके प्रयासों को प्रोत्साहित किया। ब्लॉक प्रमुख ने मुख्य अतिथि को सम्मानित किया।

इस मौके पर सागर मल पारीक,लोकतंत्र सेनानी प्रमोद गुप्ता, गंगाधर मिश्रा एडवोकेट, डॉ. अरविंद सिंह, प्रबन्धक विश्वपाल सिंह,भगवान दास सोनी, मंडल अध्यक्ष शिव सहाय सिंह, सुबेद वर्मा, बादशाह सिंह, पूर्व प्रधान कौशलेन्द्र चौधरी, भगवानदास सोनी, मौलाना खालिद, डॉ. अरशद रईस, शिवा जी पाण्डे, डॉ.एनके सिंह, सुदर्शन सिंह, विवेक सिंह विसेन, मनोज सिंह हीरालाल आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

एक घंटे में पांच बार गुजरी ट्रेन, जाम से हलकान रहे लोग

संवाददाता–बलरामपुर। अतिरिक्त ट्रेनों के संचालन से दिन में कई–कई बार नगर के झारखंडी रेलवे का समपार फाटक बंद होने से लोगों को भीषण जाम का सामना करना पड़ रहा है। सोमवार को एक घंटे में पांच ट्रेनों के गुजरने के दौरान पूरे शहर में भीषण जाम लगा रहा। इस जाम में एंबुलेंस व स्कूली बच्चों की बसें भी फंसी रहीं। दिन में दो से तीन बजे के मध्य जाम का आलम यह था कि लोग इस समस्या से बिलबिला उठे। लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में विलंब हुआ।

इस समय कुछ अतिरिक्त ट्रेनों का संचालन बलरामपुर रूट से किया जा रहा है। सवारी गाड़ियों के साथ–साथ दिन में कई बार माल गाड़ियां भी गुजरती हैं। सबसे ज्यादा जाम उस समय लगता है जब मालगाड़ी के आने का समय होता है। क्योंकि माल गाड़ी के आने और समपार फाटक खुलने में करीब 20 मिनट का समय बीत जाता है। इस दौरान नगर के बहराइच रोड के पहलवारा मोहल्ले तक, तुलसीपुर रोड के अम्बेडकर तिराहा तक व गोंडा रोड गन्ना दफ्तर तक भीषण जाम लग जाता है। वहीं संतोषी माता मंदिर रेलवे क्रासिंग बंद होने पर भी यही नजारा रहता है। यहां समपार फाटक बंद होने पर गोंडा रोड और स्टेडियम जाने वाले रास्ते पर वाहनों के चक्का जाम हो जाते हैं। सोमवार को पूरा दिन लोग जाम से जूझते रहे। सबसे विकराल स्थिति दोपहर में रही। दो से तीन बजे के मध्य तो पूरा शहर जाम से कराहता नजर आया। एक गाड़ी गुजर रही थी कि फिर 15 मिनट के अंतराल में दूसरी ट्रेन आ जा रही थी। मतलब जाम खत्म होता नहीं था कि फिर से वही स्थिति हो जा रही थी। एंबुलेंस की गाड़ियों में मरीज तड़प रहे थे तो जाम में फंसे स्कूली बच्चे भी परेशान दिखे। वहीं लोगों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में भी विलंब हुआ। समपार फाटक के दोनों लेन वाहनों से खचाखच भरे हुए थे। स्थिति यह थी कि समपार फाटक खुलने के बाद जाम में फंसे वाहनों को निकालने में यातायात कर्मियों को भारी मशक्कत करना पड़ रहा था। हर कोई यही कह रहा था कि भगवान जाने इस समस्या से कब निजात मिलेगी। उमेश यादव, यातायात प्रभारी बलरामपुर ने कहा कि जाम लगने पर यातायात बहाल करने के लिए कड़ा परिश्रम किया जाता है। यथा शीघ्र जाम हटवाने की कोशिश की जाती है।

सुआंव नदी किनारे स्थित धार्मिक स्थलों का नहीं हुआ कायाकल्प

संवाददाता–बलरामपुर। सुआंव नदी के अस्तित्व को संवारने के लिए राष्ट्रीय हरित अधिकरण की कवायद कागजों तक सीमित है। सुआंव पर अतिक्रमण का सफाया करने के फरमान के साथ ही धार्मिक आस्था का विशेष ध्यान रखने की मंशा साकार नहीं हो सकी है। इसके तहत सुआंव की जद में आने वाले धार्मिक स्थलों का कायाकल्प किया जाना था। सुआंव नदी के उदगम व जिले में अंत तक बीच में जो भी मंदिर या मस्जिद आएंगे, उनका सुंदरीकरण किया जाना है। सरयू ड्रेनेज खंड द्वितीय ने धार्मिक स्थलों का चिह्नांकन किया। इसके लिए प्रस्ताव तैयार कर जिला प्रशासन के माध्यम से शासन को भेजा गया। एनजीटी ने सुंदरीकरण का फरमान जारी कर दिया, लेकिन नमामि गंगे परियोजना से बजट न मिलने के कारण एक वर्ष बाद भी इस दिशा में कोई कार्यवाही आगे नहीं बढ़ सकी है। श्रावस्ती सीमा के निकट गोपियापुर से निकली सुंआब नदी (सुआंव) गंदगी से सराबोर है। सुआंव की लंबाई करीब 120 किलोमीटर है। जिले में चांदे ताल के पास राप्ती से सटकर बहते हुए रसूलाबाद में आखिरी पड़ाव है। यहां से सिद्धार्थनगर जनपद में प्रवेश कर राप्ती में मिल जाती है। पहले सुआंब नदी का पानी निर्मल होता था। यह लोगों की आस्था से भी जुड़ा हुआ था। धीरे–धीरे शहरीकरण की होड़ व अतिक्रमण के कारण नदी का दायरा सिमटते हुए नाला में तब्दील हो गया। यह नाला अब सिर्फ गंदे पानी की निकासी का रास्ता बनकर रह गया है। इसे संवारने के लिए अब एनजीटी ने सितंबर 2023 में पहल शुरू की थी। एक वर्ष बीतने के बाद भी कवायद आगे नहीं बढ़ सकी है।

सुआंव नदी के उदगम स्थल के निकट ही गिधरैया गांव में पांडवकालीन रेणुकानाथ मंदिर स्थित है। सरयू नहर राष्ट्रीय परियोजना का लोकार्पण करते आए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सभा मंदिर के निकट हंसुवाडोल में ही लगाई गई थी। मंदिर का महात्म्य पांडवों के इतिहास से जुड़ा है। मंदिर के पुजारी विश्वनाथ गिरि के अनुसार द्वापर युग के अंत में पांडवों के अज्ञातवास के दौरान भीम ने कीचक का वध किया था। पांडवों ने श्रावस्ती के महाराज विराट के यहां शरण ले रखी थी। महाभारत युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए श्रीकृष्ण की प्रेरणा पर पांडवों ने यहां शिवलिंग की स्थापना कर मंदिर का निर्माण कराया। तब इस मंदिर का नाम 'रणकुक्ष मंदिर था, जो कालांतर में रेणुकानाथ मंदिर के नाम से विख्यात हुआ। करीब पांच सौ वर्ष पूर्व अंग्रेज शासनकाल में खोदाई के दौरान यह शिवलिंग निकला था। ग्रामीणों ने आपसी सहयोग से मंदिर बनवाकर पूजा–अर्चना शुरू कर दी।

अनिल कुमार, अधिशासी अभियंता, सरयू ड्रेनेज खंड द्वितीय ने कहा कि सुआंव की जद में आने वाले मंदिर, मस्जिद व कब्रिस्तान का चिह्नांकन कर रिपोर्ट एनजीटी को भेजी गई थी। अब सुंदरीकरण नमामि गंगे योजना के तहत होना है। वन विभाग को नोडल बनाया गया है। अभी बजट आवंटित नहीं हुआ है।

अलग अलग हादसों में जीजा–साला समेत तीन की मौत

संवाददाता–कुशीनगर। दो अलग–अलग हुये सड़क हादसे में जीजा–साले समेत तीन लोगों की मौत हो गई। जटहां बाजार थाना क्षेत्र के हसना मठिया चौराहे पर ससुराल से साले के साथ बाइक से घर लौट रहे बहनोई की बाइक कोहरे के कारण अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। इसमें दोनों की मौत हो गई। वहीं हाटा के झांगा बाजार में खेत में फसल देखकर लौट रहे बुजुर्ग की अज्ञात वाहन ने ठोकर मार दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। दोनों मामलों में मौके पर पहुंची मुकामी थाने की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पडरौना कोतवाली के बबुईया हरपुर के भरटोली निवासी सतीश राजभर उम्र 22वर्ष, नेबुआ नौरंगिया के कौआसार के काशी टोला निवासी गोरख राजभर उम्र 18 वर्ष के साथ बाइक से ससुराल से घर लौट रहा था। रास्ते में घना कोहरा की वजह से अनियंत्रित होकर मठिया चौराहे के पास उसकी बाइक नहर के किनारे पेड़ से टकरा गई। इससे दोनों को गंभीर चोटे लगी तथा दोनों अचेत हो गए। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों को एंबुलेंस की सहायता से इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचायी, जहां पर डाक्टरों ने जांच के बाद तत्काल गोरख को मृत घोषित कर दिया, जबकि इलाज के दौरान सतीश की भी मौत हो गई। इसकी सूचना मिलते ही परिवारीजनों में चीख पुकार मच गई। रविवार को सुबह परिवारीजनों के सूचना पर पहुंची जटहां बाजार पुलिस ने दोनों शवों को जिला अस्पताल से कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

संगठन को मजबूत बनाने के लिए क्षमतावान लोगों को लाना होगा –केशरी

संवाददाता–महराजगंज। भाजपा कार्यालय पर संगठनात्मक चुनाव कार्यशाला का आयोजन जिलाध्यक्ष संजय पांडेय की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य अतिथि जिला चुनाव अधिकारी ओंकार केशरी ने कहा कि संगठन को और मजबूत बनाने के लिए क्षमतावान व विचारवान लोगों को लाना होगा। आज पार्टी जिस ऊंचाई पर पहुंची है, वह कार्यकर्ताओं के परिश्रम की देन है। कार्यशाला का संचालन सह चुनाव प्रभारी–पूर्व नपा अध्यक्ष कृष्ण गोपाल जायसवाल ने किया।

चुनाव अधिकारी ने कहा कि चुनाव के तहत 5 दिसंबर तक बूथों का गठन कर लेना है। 15 दिसंबर तक मंडलों का गठन कर लिया जाएगा। 5 तक बूथ समिति का गठन करना है। इसके लिए शक्ति केन्द्रवार चुनाव अधिकारी बनाये गये हैं, जिनके नेतृत्व में बूथ समिति व पन्ना प्रमुखों का गठन होना है। जिलाध्यक्ष संजय पांडेय ने कहा कि पार्टी के निर्देशानुसार प्रत्येक बूथ पर न्यूनतम दो सक्रिय सदस्य बनाए जाने आवश्यक हैं। प्रत्येक मंडल में अधिकाधिक संख्या में महिला कार्यकर्ताओं की भागीदारी भी अपेक्षित है। 6 दिसंबर को भारत रत्न डॉ. भीम राव आंबेडकर की पुण्य तिथि सभी बूथों पर मनेगी। 25 दिसंबर को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाएगा। 26 दिसंबर को गुरु गोविंद सिंह के शहीद पुत्रों की स्मृति में बाल दिवस मनाना है। मंडल अध्यक्ष के लिए 45 वर्ष से कम आयु वाले ही मंडल अध्यक्ष बनेंगे।

जिला प्रभारी रामविजियावन मौर्य, पनियरा विधायक ज्ञानेंद्र सिंह, सदर विधायक जय मंगल कन्नौजिया, नौतनवा विधायक ऋषि त्रिपाठी, पूर्व जिलाध्यक्ष समीर त्रिपाठी, पूर्व जिलाध्यक्ष परदेसी रविदास, पनियरा चेयरमैन उमेश जायसवाल, सह चुनाव प्रभारी जिला महामंत्री बबलू यादव ने भी संगठन के चुनाव पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष अमरनाथ पटेल, रामाज्ञा निषाद, मधुर सिंह, संतोष सिंह, प्रभाकर द्विवेदी, जिला महामंत्री ओम प्रकाश पटेल, प्रदीप सिंह, जिला मंत्री आशुतोष शुक्ला, गौतम तिवारी, सरोज पांडेय, बैजनाथ पटेल, बच्चू लाल चौरसिया, जिला कोषाध्यक्ष इंद्रा चौरसिया, पूर्व प्रमुख हरिश्चंद्र सोनकर, नरेंद्र खरवार के अलावा मंडल अध्यक्ष गण, मंडलों के चुनाव प्रभारी गण मौजूद रहे। अंत में प्रमुख प्रतिनिधि राम हरख गुप्ता और प्रमुख प्रतिनिधि ओम प्रकाश जायसवाल के पिता के निधन और मंडल अध्यक्ष डब्लू सिंह के परिवार में निधन पर दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

पुष्पांजलि की तरह है भारतीय संस्कृति-प्रो. अवधेश प्रधान

संवाददाता–देवरिया। नागरी प्रचारिणी सभा में रविवार को एकल व्याख्यान व सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इसमें भारत को परंपराओं का धनी देश बताया गया। वक्ताओं ने देश में परंपराओं के वैचारिक वर्गीकरण को भेदपूर्ण कहते हुए भारतीय संस्कृति को पुष्पांजलि की तरह बताया। इसका आयोजन कलावती देवी स्मृति न्यास ने किया। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अवधेश प्रधान ने लोक व शास्त्र की व्याख्या करते हुए कहाकि भारत में जितने विचार, संस्कृति और परम्परायें हुईं वह एक दूसरे की विरोधी नहीं रहीं। शास्त्रार्थ के द्वारा उनको मान्यता दी गई। भारत में परंपराओं की शृंखला बहुत पुरानी है। हमारे देश में विविध परंपराएं चली आ रही हैं। जैसे एक ही परिवार में आस्तिक भी हैं तो नास्तिक भी हैं। सभी एक साथ रहते हुए एक दूसरे का सम्मान करते हुए रहते हैं। ठीक ऐसे देश में विभिन्न परंपराएं एक साथ पुष्पित पल्लवित होती रही हैं। पुष्पांजलि देते समय हाथ की छोटी बड़ी सभी अंगुलियां एक साथ जुट जाती हैं। हम नमस्कार करते हैं तो दोनों हाथ अलग होते हुए भी जुड़ जाते हैं। कुछ ऐसी ही भारत में परंपराएं रही हैं। उन्होंने कहाकि वेद में ऋषियों ने वेद में कहाकि ऋषियों ने शास्त्रों में कहा है कि अनेक परंपराओं को धारण करने वाली पृथ्वी एक है। वेदों में बहुरंग, बहुविध की बात कही गई है। वेदों में जहां एक की बात आती है, वहां बहु की बात भी की गई है। इसका अर्थ है कि भारत में सम्मान मिला है। सभी परंपराएं सहयात्री की तरह रही हैं। प्रो. अवधेश प्रधान ने कहाकि तुलसी के राम जब अयोध्या से निकलते हैं तो कोई सवर्ण स्वागत करने नहीं आता है। वन में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोग काम धाम छोड़कर राम को देखने दौड़े चले आते हैं। राम का सहयोग भी वही लोग करते हैं। वहां कोई भेद दृष्टि नहीं है। उन्होंने कहाकि सनातन संस्कृति को एक पुस्तक में नहीं बांधा जा सकता है।

उन्होंने कहाकि कुछ लोग परंपराओं का वर्गीकरण वैचारिक आधार पर कर रहे हैं। अपनी भेदपूर्ण दृष्टि से ब्राह्मण परंपरा व श्रमण परंपरा, लघु परंपरा व महान परंपरा के रूप में परिभाषित कर लिख रहे हैं। तमिलनाडु के एक विद्वान सवर्ण और अवर्ण अलग–अलग दिखाने का काम किया है। कुछ लोगों ने नगरीय व ग्रामीण कोटियां भी बनाई हैं। इसके लिए बाहर के लोग प्रयास कर रहे हैं। न जाने कितना फंड हमारी परंपराओं को नष्ट करने के लिए दिया जा रहा है। कालिदास के ग्रंथों में नगरीय सभ्यता के साथ अरण्य अर्थात ग्रामीण सभ्यता का वर्णन है। जहां राजा के गुरु, सलाहकार और अन्य लोग रहते हैं। नगरीय सभ्यता 25 प्रतिशत तो अरण्य में रहने वाले 75 प्रतिशत बताए गए हैं। भाष्काचार्य के ग्रंथ में यूनानी पंडितों का भी सम्मान किया गया है। इससे साफ है कि भारत में परंपराएं प्राचीनतम हैं और किसी परंपरा को लेकर कोई भेददृष्टि समाज में नहीं रही है। गोष्ठी विशिष्ट वक्ता गोरखपुर विविके हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनंत मिश्र ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डा. अरुनेश नीरन, नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष आचार्य परमेश्वर जोशी, मंत्री डॉ. अनिल कुमार मणि त्रिपाठी, डॉ. प्रेमशीला शुक्ला, डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी, आशुतोष मणि, श्रीनिवास त्रिपाठी, जगदीश उपाध्याय, वीरेन्द्र शुक्ल, लालता प्रसाद चौधरी, दयाशंकर कुशवाहा, उद्‌घव मिश्र, रजनीश गोरे, श्वेतांक करन त्रिपाठी, विनय कुमार पाठक, जितेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, चतुरानन ओझा, रविन्द्रनाथ तिवारी, अनिल कुमार त्रिपाठी, डॉ. संजय कनोजिया, पौहारीशरण राय, कैप्टन वीरेन्द्र सिंह, लक्ष्मीनारायण, डॉ. प्रद्योत सिंह, दिनेश चंद्र त्रिपाठी, राबी शुक्ल, भृगुदेव मिश्र, शरदेंदु मिश्रा, आद्या प्रसाद शुक्ल, डॉ. भावना सिन्हा, वृद्धिचंद विश्वकर्मा, रजनीश गोरे, बृजेश पांडेय आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रो. अवधेश प्रधान, डॉ. अनंत मिश्रा, डॉ. सीमांत प्रियदर्शी, कवि गिरधर करुण, डॉ. जयनाथ मणि त्रिपाठी, श्रीचंद गोरे, आचार्य परमेश्वर जोशी, डॉ. दिवाकर प्रसाद तिवारी, इंद्र कुमार दीक्षित, रमेश सिंह श्दीपकश कवि को उत्तरीय, माला और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी क्रम में नागरी प्रचारिणी सभा की समाचार संदर्शिका अंक–5 का विमोचन किया गया।

मेडिकल कॉलेज में एक दर्जन विभागों के संचालन की तैयारी

संवाददाता–गोण्डा। स्वशासी मेडिकल कालेज में लगभग एक दर्जन विभागों के संचालन की तैयारी है। हाल ही में विभागों के लिए इंचार्जों की तैनाती की गई है, उन्हें कालेज प्रशासन से जिम्मेदारियां भी सौंपी जा चुकी है। अब विभागवार कर्मचारियों की तैनाती की जानी है। विभागों को कर्मचारी हैंडओवर करने के लिए ड्यूटी के मिनट्स तैयार किए जा रहे हैं। जल्द ही ड्यूटी के मिनट्स जारी भी कर दिए जाएंगे। वहीं बाबू ईश्वर शरण अस्पताल को मेडिकल कालेज की भांति संचालित करने के लिए कई बदलाव भी किए जा रहे हैं। आने वाले समय में यह बदलाव धरातल पर मूर्त रूप लेते दिखेंगे। स्वशासी मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस प्रथम वर्ष की पढ़ाई शुरू हो गई है। 100 सीटें भी फुल हो गई हैं। आवश्यकतानुसार जूनियर रेजीडेंट, सीनियर रेजीडेंट, असिस्टेंट प्रोफेसर व प्रोफेसर की भर्ती भी की जा चुकी है। वहीं मेडिकल कॉलेज से सम्बद्ध बाबू ईश्वर शरण अस्पताल भी मेडिकल कालेज की भांति संचालित होने लगा है। अब विभागों को संचालित करने की कवायद चल रही है। कर्मचारियों को विभागवार ड्यूटी लगाए जाने की प्रक्रिया पूरी की जा रही है।

पैथोलॉजी विभाग, जनरल सर्जरी विभाग, हड्डी रोग विभाग, मेडिसिन विभाग, ब्लड बैंक, गायनी विभाग, चर्म रोग विभाग, बाल रोग विभाग, इमरजेंसी मेडिसिन विभाग, साइकियाट्री विभाग, एआरटी सेंटर, एनआरसी, रेडियोलॉजी विभाग, एनेस्थीसिया विभाग, पल्मोनरी विभाग, ईएनटी विभाग आदि। हाल ही में मेडिकल कॉलेज के जिम्मेदारों की बैठक में विभागवार कर्मचारी तैनात किए जाने का निर्णय भी लिया जा चुका है।

कर्मचारियों के ड्यूटी लिस्ट भी तैयार कराई जा रही है। बाबू ईश्वर शरण अस्पताल के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डा एम डब्ल्यू खान ने बताया कि जल्द ही कर्मचारियों की विभागवार ड्यूटी लगाई जाएगी।

चकसड़ में दबंगों ने छप्पर और दीवार गिराई

संवाददाता–गोण्डा। थानाक्षेत्र के चकसड़ गांव में दबंगों ने एक गरीब व्यक्ति का छप्पर और दीवार गिराकर ध्वस्त कर दिया। घटना की वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हालांकि पीड़ित शिवदास पुत्र बाबूराम ने सोमवार को पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

एसओ ने बताया कि मामले में आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। पीड़ित शिवदास ने पुलिस को दिए गए प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया है कि कि मैंने दीवार बनवाकर उस पर छप्पर रख रखा था। रविवार की शाम करीब 4रू30 बजे शाम को गांव के विपक्षी दंपति और दो अज्ञात व्यक्ति आए। चारों हमारी दीवार व छप्पर को गिराने लगे जब उसे रोका तो सभी लोग एकजुट होकर अपशब्द कहने लगे। यही नहीं उसे लात–घूसा और मुक्का–थप्पड़ से जमकर पीटा। इसके बाद सभी लोग लाठी–डंडे व बल्लम से दीवार व छप्पर गिरा दिए। उसने जब मदद की गुहार लगाई तो गांव के तमाम मौके की ओर दौड़े।

इस पर विपक्षी जान से मारने की देते हुए भाग निकले। पीड़ित ने रविवार देर शाम ही कहोबा पुलिस चौकी को इस मामले की सूचना दी लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। थानाध्यक्ष अनीता यादव ने बताया कि प्रार्थना पत्र मिला है दोनों पक्षों को थाने पर बुलाया गया है। जांच के बाद दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी।

पुष्पांजलि की तरह है भारतीय संस्कृति–प्रो. अवधेश प्रधान

संवाददाता–देवरिया। नागरी प्रचारिणी सभा में एकल व्याख्यान व सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इसमें भारत को परंपराओं का धनी देश बताया गया। वक्ताओं ने देश में परंपराओं के वैचारिक वर्गीकरण को भेदपूर्ण कहते हुए भारतीय संस्कृति को पुष्पांजलि की तरह बताया। इसका आयोजन कलावती देवी स्मृति न्यास ने किया। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अवधेश प्रधान ने लोक व शास्त्र की व्याख्या करते हुए कहाकि भारत में जितने विचार, संस्कृति और परम्परायें हुईं वह एक दूसरे की विरोधी नहीं रहीं। शास्त्रार्थ के द्वारा उनको मान्यता दी गई। भारत में परंपराओं की शृंखला बहुत पुरानी है। हमारे देश में विविध परंपराएं चली आ रही हैं। जैसे एक ही परिवार में आस्तिक भी हैं तो नास्तिक भी हैं। सभी एक साथ रहते हुए एक दूसरे का सम्मान करते हुए रहते हैं। ठीक ऐसे देश में विभिन्न परंपराएं एक साथ पुष्पित पल्लवित होती रही हैं। पुष्पांजलि देते समय हाथ की छोटी बड़ी सभी अंगुलियां एक साथ जुट जाती हैं। हम नमस्कार करते हैं तो दोनों हाथ अलग होते हुए भी जुड़ जाते हैं। कुछ ऐसी ही भारत में परंपराएं रही हैं। उन्होंने कहाकि वेद में ऋषियों ने वेद में कहाकि ऋषियों ने शास्त्रों में कहा है कि अनेक परंपराओं को धारण करने वाली पृथ्वी एक है। वेदों में बहुरंग, बहुविध की बात कही गई है। वेदों में जहां एक की बात आती है, वहां बहु की बात भी की गई है। इसका अर्थ है कि भारत में सम्मान मिला है। सभी परंपराएं सहयात्री की तरह रही हैं। प्रो. अवधेश प्रधान ने कहाकि तुलसी के राम जब अयोध्या से निकलते हैं तो कोई सवर्ण स्वागत करने नहीं आता है। वन में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोग काम धाम छोड़कर राम को देखने दौड़े चले आते हैं। राम का सहयोग भी वही लोग करते हैं। वहां कोई भेद दृष्टि नहीं है। उन्होंने कहाकि सनातन संस्कृति को एक पुस्तक में नहीं बांधा जा सकता है।

उन्होंने कहाकि कुछ लोग परंपराओं का वर्गीकरण वैचारिक आधार पर कर रहे हैं। अपनी भेदपूर्ण दृष्टि से ब्राह्मण परंपरा व श्रमण परंपरा, लघु परंपरा व महान परंपरा के रूप में परिभाषित कर लिख रहे हैं। तमिलनाडु के एक विद्वान सवर्ण और अवर्ण अलग–अलग दिखाने का काम किया है। कुछ लोगों ने नगरीय व ग्रामीण कोटियां भी बनाई हैं। इसके लिए बाहर के लोग प्रयास कर रहे हैं। न जाने कितना फंड हमारी परंपराओं को नष्ट करने के लिए दिया जा रहा है। कालिदास के ग्रंथों में नगरीय सभ्यता के साथ अरण्य अर्थात ग्रामीण सभ्यता का वर्णन है। जहां राजा के गुरु, सलाहकार और अन्य लोग रहते हैं। नगरीय सभ्यता 25 प्रतिशत तो अरण्य में रहने वाले 75 प्रतिशत बताए गए हैं। भाष्काचार्य के ग्रंथ में यूनानी पंडितों का भी सम्मान किया गया है। इससे साफ है कि भारत में परंपराएं प्राचीनतम हैं और किसी परंपरा को लेकर कोई भेददृष्टि समाज में नहीं रही है। गोष्ठी विशिष्ट वक्ता गोरखपुर विविके हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनंत मिश्र ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डा. अरुनेश नीरन, नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष आचार्य परमेश्वर जोशी, मंत्री डॉ. अनिल कुमार मणि त्रिपाठी, डॉ. प्रेमशीला शुक्ला, डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी, आशुतोष मणि, श्रीनिवास त्रिपाठी, जगदीश उपाध्याय, वीरेन्द्र शुक्ल, लालता प्रसाद चौधरी, दयाशंकर कुशवाहा, उद्‌घव मिश्र, रजनीश गोरे, श्वेतांक करन त्रिपाठी, विनय कुमार पाठक, जितेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, चतुरानन ओझा, रविन्द्रनाथ तिवारी, अनिल कुमार त्रिपाठी, डॉ. संजय कनोजिया, पौहारीशरण राय, कैप्टन वीरेन्द्र सिंह, लक्ष्मीनारायण, डॉ. प्रद्योत सिंह, दिनेश चंद्र त्रिपाठी, राबी शुक्ल, भृगुदेव मिश्र, शरदेंदु मिश्रा, आद्या प्रसाद शुक्ल, डॉ. भावना सिन्हा, वृद्धिचंद विश्वकर्मा, रजनीश गोरे, बृजेश पांडेय आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रो. अवधेश प्रधान, डॉ. अनंत मिश्रा, डॉ. सीमांत प्रियदर्शी, कवि गिरधर करुण, डॉ. जयनाथ मणि त्रिपाठी, श्रीचंद गोरे, आचार्य परमेश्वर जोशी, डॉ. दिवाकर प्रसाद तिवारी, इंद्र कुमार दीक्षित, रमेश सिंह श्दीपकश कवि को उत्तरीय, माला और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी क्रम में नागरी प्रचारिणी सभा की समाचार संदर्शिका अंक–5 का विमोचन किया गया।

झाड़ी में लावारिस मिला नवजात, हालत गंभीर

संवाददाता–गोरखपुर। गोरखपुर के बांसगांव में एक बेहद हैरान करने वाला मामला सामने आया है। बांसगांव थानाक्षेत्र में रविवार की देर रात एक युवती(20) ने नवजात शिशु को जन्म दिया। लोक लज्जा के डर से युवती ने सोमवार की सुबह तड़के नवजात को गांव की झाड़ियों में फेंक दिया। लेकिन, किसी ने बच्चे के फेंकते देख लिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने नवजात को पीएचसी भेजकर उसका उपचार शुरू करवाया है। सूत्रों ने बताया कि युवती की पहचान हो गई है। पुलिस ने युवती को पूछताछ के लिए थाने बुलवाया है। पुलिस पता करने का प्रयास कर रहा है कि अविवाहित युवती और किसका ये नवजात शिशु है। नवजात के प्रजनन में कौन–कौन लोग शामिल थे। गोरखपुर शहर में अभी कुछ महीनों पहले ऐसा ही एक मामले सामने आया था। बक्शीपुर की एक कॉलोनी में लावारिश नवजात शिशु को किसी ने फेंक दिया था। नगर निगम के कूड़ा साफ करने वाले ने इसे उठाकर एक जगह से दूसरी जगह फेंका। दो दिन तक पुलिस ने लगभग 17 सीसीटीवी कैमरों की जांच की, लेकिन फेंकने वालों की तलाश नहीं कर सकी। बांसगांव में तो पुलिस ने संदिग्ध युवती को पूछताछ के लिए बुलवाया लिया है।

महिला की संदिग्ध मौत, खुदकुशी की सूचना पर पहुंची पुलिस

संवाददाता–गोरखपुर। खजनी के विशुनपुरा में बबिता प्रजापति पत्नी विवेकानंद प्रजापति ने रविवार की शाम करीब सात बजे कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह दो बच्चों की मां थी। बड़ा बेटा छह साल का अंकुर और तीन साल की आस्था है। बबिता का मायका बरगदवा गोरखपुर में है, पति विदेश रहता है। घर पर देवरानी व ससुर रहते हैं। सोमवार सुबह परिवारीजनों की मौत की सूचना मिली, जिसके बाद थानाध्यक्ष सदानंद सिन्हा हमराही के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। थानाध्यक्ष ने बताया कि शव को पीएम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम बाद ही पता चलेगा की महिला ने फांसी लगाई थी या स्वाभाविक मौत हुई है। उन्होंने बताया घटना बाद परिजन पुलिस को सूचना दिए बगैर देर शाम महिला को उपचार के लिए जिला अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने सुबह घटना की जानकारी दी। मायका पक्ष पहुंचा था, वे लोग भी फांसी लगाने की घटना को इनकार कर हार्ट अटैक को बता रहे हैं।

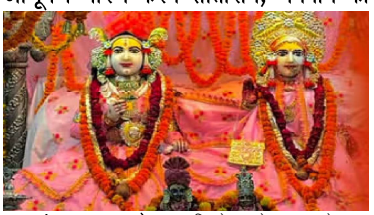

राम विवाहोत्सव की धूमः जानकी महल में पांच किलो सोने के आभूषण धारण करेंगे सीताराम, भगवान का रूप बढ़ाएगा आकर्षण

संवाददाता–अयोध्या। रामनगरी अयोध्या में श्रीराम विवाहोत्सव का रंग चटख हो गया है। रामनगरी के मंदिरों में राम विवाहोत्सव की परंपरा पूरे भव्यता के साथ निभाई जाती है। माता जानकी का मायका कहे जाने वाले जानकी महल की तैयारियां उत्सव की भव्यता दर्शा रही हैं। जानकी महल में राम विवाह पर विराजमान भगवान श्रीसीताराम के विग्रह को पांच किलो सोने से निर्मित आभूषण धारण कराए जाएंगे। साथ ही बरात में लखनऊ की शहनाई गूंजेगी, राजस्थान का डांस ग्रुप व भगवान के स्वरूप आकर्षण का केंद्र होंगे।

रामजन्म भूमि में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहली बार श्रीराम विवाह का उत्सव धूमधाम से मनाने की तैयारी है। राम नगरी के अलग–अलग मंदिरों से छह दिसंबर को राम बरात निकाली जाएगी। श्रीसीता–राम विवाहोत्सव का मुख्य उत्सव छह दिसंबर को है। रामनगरी के चुनिंदा मंदिरों में राम विवाहोत्सव पूरे भाव–चाव से मनाया जाता है। रामनगरी के श्री जानकी महल ट्रस्ट में मिथिला पद्धति से विवाहोत्सव मनाया जाता है। यहां पर भगवान राम को दुल्हा सरकार और किशोरी जी को बेटी माना जाता है।

इस बार जानकी महल में उत्सव और भी खास होने जा रहा है। जानकी महल के ट्रस्टी आदित्य सुल्तानिया बताते हैं कि दिल्ली की मशहूर रामलीला जो प्राण प्रतिष्ठा के समय रामलला के सम्मुख लीला कर चुकी है। उसी लीला मंडली के 40 कलाकार चार दिनों तक रामलीला का मंचन करेंगे। दूल्हा सरकार व किशोरी जी के लिए पांच किलो सोने से निर्मित आभूषण जैसे मुकुट, हार, कर्धन आदि बनवाए गए हैं, जो उन्हें धारण कराए जाएंगे।

आदित्य ने बताया कि बरात में छह बग्घी, ऊंट, घोड़े, लखनऊ की शहनाई, दिल्ली की लाइटिंग आकर्षण का केंद्र होगी। इसके अलावा बरात में विभिन्न प्रांतों के करीब एक हजार लोग शामिल होंगे। राधा, कृष्ण, शंकर पार्वती, व हनुमान के स्वरूप भी आकर्षण बढ़ाएंगे। झारखंड व राजस्थान के कलाकार प्रस्तुति देंगे। बनारस का काशी चाट भंडार इस बार भगवान राम की बरातियों की सेवा में शामिल होगा। साथ ही कलकत्ता के चाय, टोस्ट का लुफ्त भी बराती उठाएंगे। वर पक्ष की अगुवाई दिल्ली के मुरारी लाल अग्रवाल करेंगे तो वधू पक्ष जानकी महल ट्रस्ट दुल्हा सरकार व बरातियों की सेवा करेगा। वहीं करीब एक हजार लोगों को वस्त्र, कंबल, राशन व ऊनी कपड़े भेंट किए जाएंगे।

उत्सव का आगाज तीन दिसंबर को रामार्चा महायज्ञ, रामलीला और गणेश पूजन से होगा। चार को फुलवारी लीला होगी। आदित्य सुल्तानिया के अनुसार राम विवाहोत्सव के दौरान जानकीमहल में फुलवारी की प्रस्तुति आकर्षण का केंद्र होती है। जानकीमहल के मुख्य आगार के सम्मुख स्थापित मनोहारी फुलवारी को जनकपुर की उस फुलवारी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जहां त्रेता में श्रीराम और सीता का पहली बार आमना–सामना हुआ था। इस मौके पर रामनगरी के प्रतिनिधि चुनिंदा संत–धर्माचार्य भी आमंत्रित होते हैं जो श्रीराम के प्रसंग का आस्वाद ही नहीं लेते बल्कि अपनी वेश–भूषा और ध्यानियों जैसी भाव–भंगिमा से श्रीराम के गुरु और संरक्षक–मार्गदर्शक के रूप में ऋषि विश्वामित्र की याद भी दिलाते हैं।

दिव्यांग बच्चों की खेल प्रतियोगिता दौड़ में अमित, किशन अव्वल

–भारतीय बस्ती संवाददाता– बस्ती। परिषदीय विद्यालयों के दिव्यांग बच्चों हेतु तहसील स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन ब्लॉक संसाधन केंद्र हर्रैया के परिसर में सोमवार को किया गया। खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी हर्रैया विजय आनंद ने फीता काटकर किया। बीईओ ने कहा कि दिव्यांग बच्चों के अंदर छिपी हुई प्रतिभाओं को उचित मंच नहीं मिल पाता, जिसके कारण वे अपनी काबिलियत को सही तरीके से नहीं दिखा पाते। कहा कि खेल प्रतियोगिता से दिव्यांग बच्चों में सामाजिकता का विकास होता है। उनके भीतर आत्मविश्वास जागृत होता है। इसलिए दिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए इस तरह के आयोजन आवश्यक हैं। 100 मी. दौड़ श्रवण बाधित में अमित और मानसिक विकलांगता श्रेणी में किशन अव्वल रहे। कुर्सी दौड़ श्रवण बाधित बालक वर्ग में साहिल, बालिका वर्ग में सवीना और मानसिक विकलांगता में मनीष प्रथम रहे। छूकर पहचानो में साकिब ने प्रथम और सुमित सोनकर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सुलेख में सृष्टि तथा कला प्रतियोगिता में दीक्षा अव्वल रहीं। रस्साकशी में साहिल, रोहित, कुशल और श्याम की टीम अव्वल रही। विजेता खिलाड़ियों सहित सभी प्रतिभागी बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। बच्चों को खेल में एआरपी गिरिजेश बहादुर सिंह, उदय प्रताप सिंह और खेल अनुदेशक पवन मिश्र, दीपक सिंह, जितेंद्र, उत्तम वर्मा, संजीव, राजकुमार ने सहयोग किया। कार्यक्रम को सकुशल संपन्न कराने में विशेष शिक्षक देवेंद्र ओझा, उर्मिला द्विवेदी, अनिल पाण्डेय, शिव शंकर, विवेक, संपूर्णानंद, संतोष सिंह, राम निहाल, अमर प्रकाश सिंह, रूद्रमणि पाण्डेय, अजय वर्मा, राजेश वर्मा ने अपना योगदान दिया। इस अवसर पर प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला उपाध्यक्ष रवीश कुमार मिश्र, जगदंबा द्विवेदी, मनोज उपाध्याय, हरी जी मिश्र, भारती शुक्ला, राकेश प्रकाश श्रीवास्तव, सुनील कुमार, दिवाकर सिंह, रवि, जमुना, राकेश आदि उपस्थित रहे।

गोरक्षनगरी में 3638 किसानों से सिर्फ 21368.41 टन धान खरीद

संवाददाता–गोरखपुर। गोरक्षनगरी में 1.43 टन धान खरीद के लक्ष्य के सापेक्ष सिर्फ 21368.41 टन धान की गई है। स्पष्ट है कि जनपद में धान खरीद रफ्तार नहीं पकड़ पा रही है। हालांकि जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी अरविंद कुमार दुबे कहते हैं कि किसान गेहूं की बुआई में जुटे हैं। गेहूं की बुआई खत्म होने के उपरांत धान क्रय केंद्रों की ओर रुख करेंगे। गोरक्षनगरी में किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर धान खरीद सुनिश्चित कराने के लिए 136 क्रय केंद्र संचालित किए जा रहे हैं। खाद्य विभाग के 48 क्रय केंद्रों पर 2783 किसानों से अब तक 15907.86 टन धान की खरीद की गई है। भारतीय खाद्य निगम की 02 शाखाओं पर 18 किसानों से 78.56 टन, उत्तर प्रदेश सहकारी संघ के 51 क्रय केंद्रों पर 348 किसानों से 2001.84 टन, उत्तर प्रदेश कोआपरेटिव यूनियन के 22 क्रय केंद्रों पर 321 किसानों से 1995.37 टन, उत्तर प्रदेश उपभोक्ता सहकारी संघ के 13 क्रय केंद्र पर 150 किसानों से 1100.18 टन और उत्तर प्रदेश कृषि उत्पादन मंडी परिषद के 02 क्रय केंद्रों पर 73 किसानों से 286.60 टन धान की खरीद की गई है। कुल 136 क्रय केंद्रों पर 3638 किसानों से 21368.41 टन धान की खरीद हो सकी है। जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक धान की बिक्री के लिए अब तक 15 हजार किसानों ने पोर्टल पर पंजीकरण कराया है। 50 क्विंटल तक धान बिक्री के लिए किसी भी क्रय केंद्र पर किसान भाईयों को बेचने की छूट मिली हुई है। सरकार ने इस बार धान का समर्थन मूल्य 2300 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया है। प्रति क्विंटल 20 रुपये उतराई छनाई भी दी जा रही है। गोरखपुर जिले में धान की खरीद 4 नवंबर से शुरू हुआ। 28 फरवरी तक धान की खरीद की जाएगी। जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी अरविंद कुमार दुबे ने सोमवार को बड़हलगंज और गोला में धान क्रय केंद्र का निरीक्षण किया। केंद्र संचालकों को किसानों को धान की बिक्री के लिए प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए। कहा कि किसान भाईयों की सुविधा का ध्यान रखा जाए। अधिकाधिक धान खरीद सुनिश्चित कराया जाए।

दो अध्यापकों के परिवार को एक करोड़ से अधिक का मुआवजा

संवाददाता–अयोध्या। पांच साल पहले रुदौली क्षेत्र में स्थित स्कूल जा रहे दो अध्यापकों की सड़क दुर्घटना में मौत के मामले में एक करोड़ रुपये से अधिक का मुआवजा देने का आदेश हुआ है। मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण के न्यायाधीश शेष मणि शुक्ला ने अध्यापक आशीष विशेन के परिजनों को 1,02,12,982 रुपये बतौर क्षति पूर्ति प्रदान किए जाने का फैसला सुनाया है। वहीं अध्यापक रवींद्र नाथ श्रीवास्तव की पत्नी को 6,64,800 रुपये बतौर क्षति पूर्ति प्रदान करने का भी आदेश सुनाया गया है। साथ ही बीमा कंपनी को याचिका दायर करने की तिथि से सात प्रतिशत का साधारण ब्याज भी क्षति पूर्ति की धनराशि पर देना होगा। न्यायालय में प्रस्तुत याचिका के अनुसार थाना कोतवाली अयोध्या क्षेत्र के राघव बिहार रानोपाली निवासी आशीष विशेन व रवींद्र नाथ श्रीवास्तव अपनी मोटर साइकिल से रुदौली क्षेत्र स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालय में पढ़ाने के लिए जा रहे थे। 12 जनवरी 2019 की सुबह उदया चौराहे के पास गुप्ता होटल के सामने सीमेंट लदी ट्रक से एक्सीडेंट हो गया। मौके पर ही दोनों अध्यापकों की मृत्यु हो गई थी। न्यायालय ने बीमा कंपनी ओरियंटल इंश्योरेंस पर मृतक आशीष विशेन के माता पिता को 15–15 लाख रुपये, नाबालिग पुत्र व पुत्री को 20–20 लाख रुपये और 72,12,982 रुपये पत्नी गरिमा को प्रदान किए जाने का आदेश दिया है। वहीं मृतक रवींद्र नाथ श्रीवास्तव की पत्नी रंजना को 6,64,800 रुपये बीमा कंपनी ओरियंटल इंश्योरेंस अदा करेगी।

बीमार हुए रामलला के दर्शनार्थी तो तत्काल मिलेगा इलाज

संवाददाता–अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट रामलला के दर्शनार्थियों के लिए निरंतर सुविधाएं विकसित कर रहा है। इसी क्रम में रामलला के दर्शनार्थी अगर राम जन्मभूमि परिसर में बीमार हुए तो उन्हें तत्काल इलाज मिलेगा। तीर्थ यात्री सुविधा केंद्र में आधुनिक चिकित्सिय सुविधाओं से युक्त अस्पताल जल्द ही खुलने जा रहा है। यह अस्पताल अपोलो संस्थान की ओर से खोला जाएगा। अपोलो के विशेषज्ञ चिकित्सक यहां सेवाएं देंगे। इसीजी, एक्स–रे से लेकर अल्ट्रासाउंड तक की सुविधा यहां मिल सकेगी। श्रीराम जन्मभूमि परिसर में स्थित तीर्थ यात्री सुविधा केंद्र (पीएफसी) को इमरजेंसी अस्पताल में तब्दील करने का फैसला श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के बोर्ड आफ ट्रस्टीज ने लिया है। यह अस्पताल अपोलो संस्थान की ओर से खोला जाएगा जिसके लिए तीर्थ क्षेत्र से पहले ही अनुबंध हो चुका है। हालांकि तीर्थ क्षेत्र ने इस अनुबंध के साथ पीएफसी के ग्राउंड फ्लोर पर छह हजार वर्ग फिट स्थान खाली कराकर संस्था के सुपुर्द कर दिया था लेकिन मानक से कम जगह के कारण अस्पताल की शुरुआत अब तक नहीं हो सकी। इसके कारण बोर्ड आफ ट्रस्टीज ने तीन हजार वर्ग मीटर यानि करीब साढ़े दस हजार वर्ग फिट जमीन उपलब्ध कराने का निर्णय लिया।

इस निर्णय के मुताबिक पूरी पीएफसी को अस्पताल बनाने के लिए तीर्थ क्षेत्र के कार्यालय को शिफ्ट किया जाएगा। श्रीरामजन्म भूमि परिसर में तीर्थ क्षेत्र का कार्यालय का निर्माण अतिथि गृह व प्रेक्षागृह के साथ साथ बनाया जा रहा है। इसका निर्माण पिछले सोमवार को आधारशिला के अनावरण के साथ शुरू हो चुका है। उधर पीएफसी में बन रहे अस्पताल में उपकरण लगाने का काम चल रहा है। अल्ट्रासाउंड व एक्स–रे मशीन को इंस्टाल किया जा रहा है। क्रिटिकल केयर यूनिट भी लगाई जा रही है। यहां दो विशेषज्ञ चिकित्सक व दस पैरामेडिकल स्टॉफ शुरुआत में सेवाएं देंगे। ट्रस्ट की ओर से पहले से ही एक अस्थाई अस्पताल संचालित किया जाता है। जिसमें होम्योपैथिक के विशेषज्ञ चिकित्सक सेवाएं देते हैं।

रामलला के दरबार में रोजाना 80 हजार से एक लाख दर्शनार्थी पहुंच रहे हैं। पर्व व त्योहारों पर यह संख्या दो से तीन गुना तक बढ़ जाती है। आम दर्शनार्थियों को सुग्रीव किला के राम जन्मभूमि पथ से प्रवेश मिलता है। दर्शन के लिए आने–जाने में दर्शनार्थियों में को करीब 1600 मीटर पैदल चलना पड़ता है। ऐसे में कभी–कभी दर्शनार्थी बीमार भी हो जाते हैं। भीषण गर्मी के मौसम में आए दिन श्रद्धालु गश खाकर गिरते थे। ऐसी स्थिति में उन्हें एंबुलेंस से प्राथमिक उपचार के लिए श्रीराम अस्पताल पहुंचाना पड़ता था। अब राम जन्मभूमि परिसर में ही स्थित तीर्थ यात्री सुविधा केंद्र में ही दर्शनार्थियों को प्राथमिक उपचार मिल सकेगा। जरूरत पड़ने पर मरीजों का अल्ट्रासाउंड व एक्स–रे भी किया जा सकेगा। इससे श्रद्धालुओं को काफी सुविधा मिलेगी।

कांग्रेस के सम्मेलन में उठे मुद्दे

संवाददाता–संतकबीरनगर। कांग्रेस ने खलीलाबाद में किसान स्वाभिमान, सद्भावना महासम्मेलन का आयोजन किया। कांग्रेस नेताओं ने भाजपा को यूपी की सत्ता से हटाने के लिए संघर्ष करने का ऐलान किया। कहा कि कांग्रेस किसानों, युवाओं और व्यापारियों के हित में संघर्ष करेगी। वर्ष 2027 के चुनाव में भाजपा सरकार को हटाकर लोकतांत्रिक सरकार का गठन होगा।

खलीलाबाद स्थित जूनियर हाईस्कूल के मैदान में आयोजित किसान स्वाभिमान, सद्भावना महासम्मेलन में प्रदेश अध्यक्ष अजय राय व राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडेय मौजूद रहे। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि भाजपा सरकार किसानों के स्वाभिमान पर चोट कर रही है।

युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर देगी मशरूम की खेती –प्राचार्य

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। बाबा बरुआदास पीजी कालेज परुइया आश्रम में आयोजित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में मशरूम की खेती के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राणा प्रताप पीजी कालेज अमेठी के वनस्पति विभाग के डॉ शिशिर कुमार श्रीवास्तव और डॉ प्रीति प्रकाश शामिल रहीं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. परेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों के साथ ही युवाओं को रोजगार के अभिनव अवसरों से सुपरिचित कराना है। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल मशरूम खेती की तकनीक सिखाएगा बल्कि युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी पैदा करेगा। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं और आत्मनिर्भर बनें। महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ पूजा चौरसिया ने मशरूम के महत्व एवं विभिन्न प्रजातियों और इसके लाभों के बारे में जानकारी दी। डॉ शिशिर श्रीवास्तव ने मशरूम की खेती के तीन चरणों व्हीट स्ट्रा कम्पोस्ट, केजिंग और लैब स्तर के बारे में विस्तार से बताया और स्लाइड शो के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षित किया। डॉ प्रीति प्रकाश ने मशरूम खेती को एक लाभदायक उद्यम के रूप में प्रस्तुत किया और किसानों को स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित किया।

शादी से वापस लौट रही थी युवती– मनचलों ने गली में खींचा, दांत से कांट लिए होंठ

संवाददाता–गोरखपुर। थाने में तहरीर देकर पीड़िता परिवार के साथ गीडा थाना क्षेत्र के नगवां में एक शादी में शामिल होने गए थे, जयमाल की रश्म खत्म होने के बाद वह अपनी बहन और मामा के साथ घर वापस लौट रहे थे रास्ते में एक गली में नगवां गांव के निवासी दो मनचले युवकों कृपाशंकर और रोलू उर्फ मनीष सिंह ने उनकी बहन को पीछे से खींच लिया और छेड़खानी करने लगे तथा उसके होंठों को काट कर लहूलुहान कर दिया। अपने भाई और मामा के साथ शादी में जयमाल की रश्म में शामिल होने के बाद अपने घर वापस लौट रही युवती को रास्ते में एक गली में जबरन खींच कर उसके साथ छेड़खानी करने और होठों को काट कर लहूलुहान करने वाले दो मनचले युवकों के खिलाफ केस दर्ज कर पुलिस ने कार्रवाई शुरू कर दी है। थाना क्षेत्र के एक गांव के निवासी युवती के भाई ने थाने में दी गई तहरीर में बताया कि परिवार के साथ गीडा थाना क्षेत्र के नगवां में एक शादी में शामिल होने गए थे। जयमाल की रश्म खत्म होने के बाद वह अपनी बहन और मामा के साथ घर वापस लौट रहे थे। रास्ते में एक गली में नगवां गांव के निवासी दो मनचले युवकों कृपाशंकर और रोलू उर्फ मनीष सिंह ने उनकी बहन को पीछे से खींच लिया और छेड़खानी करने लगे तथा उसके होंठों को काट कर लहूलुहान कर दिया। महिला अपराध से जुड़े मामले में थानाध्यक्ष सदानंद सिन्हा के निर्देश पर पुलिस ने दोनों आरोपितों के खिलाफ मुकदमा अपराध संख्या 462/2024 में बीएनएस की धाराओं 74,118(1) में महिला की लज्जा भंग करने और चोट पहुंचाने की धाराओं में केस दर्ज कर लिया है।

अदालती नोटिस

इश्तहार मजरिया अदालत– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0 374 / 2024
हरभजन–सायल
1. हरभजन उम्र लगभग 50 वर्ष पुत्र रामदेव साकिन बरसॉव तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती
तारीख पेशी 03–01–2025
प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा–372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम–1925
दरख्वास्त मुसम्मा वास्ते हुसूल सर्टीफिकेट वसूल कर्जा व विकालत हाय दरख्वास्त मुसम्मा मुतवफ्फा अपने बमूजिब एक्ट 7 सन 1889 ई0 वकैद

हरगाह मुसम्मा ने दरख्वास्त हुसूल सर्टीफिकेट गुजरानी है और तारीख माह सन ई0 वास्ते समाअत दरख्वास्त के मुकर्रर हुई है। लिहाजा यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि किसी को निस्बत के उज्र हो या असालतन या वकालतन वक्त 10 बजे सुबह अदालत सिविल जज (जू0डि0) बस्ती बतारीख पेशी 03–01–2025 मुकर्रर हाजिर होकर उज्र अपना पेश करें। दरसूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का सुना न जायेगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।
अलमरकूम माह सन 20 ई0।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
मुकदमा सं0
धारा 116 उ0प्र0रा0सं 2006
अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी मेंहदावल जिला–संतकबीरनगर
त्रिलोकी प्रसाद
बनाम
विश्वनाथ आदि
1. विश्वनाथ पुत्र घिराऊ 2. दीनानाथ पुत्र उमाशंकर 3. शेषराम पुत्र राम पियारे 4. बाबूराम पुत्र राम पियारे साकिनान मौजा बरैनिया तप्पा बेलहर परगना बांसी पूरव तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर 5. ग्राम पंचायत बरैनिया तप्पा बेलहर परगना बांसी पूरव तहसील मेंहदावल जिला संतकबीरनगर
तारीख पेशी 04–12–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 04 माह 12 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जवाब दे सके या जिसके साथ कोई और शख्श हो जो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जवाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कतई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जवाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसब्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 22 माह 11 सन 2024 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्रर समायत अपील
निगरानी सं0–227
धारा 48 जो0च0अधि0
अदालत– श्रीमान उप संचालक चकबन्दी बस्ती जिला–बस्ती
चन्द्रभान सिंह
बनाम
अशर्फी आदि
1. बेचन पुत्र अशर्फी 2. पुद्दूर 3. वुद्दन 4. लुद्दूर पुत्रगण गज्जर 5. अजय कुमार पुत्र हीरा 6. विन्दादेवी पुत्री अशर्फी 7. ग्राम सभा खीरीघाट साकिन खीरीघाट तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला–बस्ती 8. सरकार उ0प्र0
तारीख पेशी 04–12–2024
अपील बनराजी फैसला अदालत बन्दोबस्ती अधिकारी चकबन्दी मुकाम बस्ती
मयरिखा 29 महीना 06 सन 2011 ई0 रेस्पान्डेन्ट।

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी बेचन इस मुकदमें में मुसम्मी चन्द्रभान सिंह ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 04 महीना 12 सन 2024 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है। अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जवाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 19 माह 11 सन 2024 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।
द0 हाकिम

संदिग्ध परिस्थितियों में ई रिक्शा चालक का शव मिला

संवाददाता–गोरखपुर। गगहा थाना क्षेत्र के गंभीरपुर रामलीला मैदान में सोमवार सुबह ई–रिक्शा के अंदर एक अधेड़ का शव मिला। व्यायाम करने पहुंचे युवकों ने शव देख पुलिस को सूचना दी। करीब दो घंटे तक शव की शिनाख्त नहीं हो पाई। हालांकि बाद में मृतक की पहचान देवरिया रुद्रपुर थाना क्षेत्र के इमामबाड़ा चौराहे के पास दूधेश्वर नाथ वार्ड निवासी रामचंद्र (55) के रूप में हुई।

मौके पर पहुंचे रामचंद्र के परिवारीजनों ने बताया कि वह ई–रिक्शा चलाते थे। रविवार को सवारी लेकर गगहा थाना क्षेत्र के किसी गांव में आए थे। रविवार रात घर नहीं आए तो परिजन तलाश में जुटे थे।

मृतक के पास मोबाइल फोन नहीं था, जिस कारण उससे संपर्क नहीं हो पा रहा था। परिजनों का कहना है कि सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें घटना के बारे में पता चला जिसके बाद मौके पर पहुंचे। जांच के दौरान पुलिस को पता चला ई–रिक्शा में लगी दो बैटरियां मौके से गायब हैं। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। अगल बगल के लोगों के अनुसार मृतक रविवार तीन बजे तक घटनास्थल से एक किलोमीटर गगहा की तरफ मां सम्मे स्थान के सामने टैम्पो में सोते समय दिखाई दिया था।

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्रर समायत अपील
अपील सं0 C 202317000000507
धारा 24(4) उ0प्र0रा0सं02006
अदालत– श्रीमान आयुक्त बस्ती मण्डल बस्ती जिला–बस्ती
कुन्दन पाल
बनाम
लाल बहादुर आदि
1. लाल बहादुर पुत्र गेल्हई –उत्तरवादी प्रथम वर्ग
2. दुर्गा प्रसाद 3. जयन्ती प्रसाद पुत्रगण रामनरेश 4. मंगरू पुत्र छांगुर 5. राम बहाल 6. रामतौल 7. राम केवल 8. राजेन्द्र प्रसाद पुत्रगण रामलौट 9. राम आनन्द 10. शिव कुमार 11. राम कुमार पुत्रगण राम औतार 12. प्रमिला देवी पत्नी राम औतार 13. ग्राम पंचायत उभाई जरिए ग्राम प्रधान 14. संतलाल 15. गंगाराम 16. उमाशंकर पुत्रगण पियारे 17. सुखलाल पुत्र झींगुर 18. मदनलाल 19.राम पाल पुत्रगण सोनई 20. बबलू 21. संजय पुत्रगण जवाहिर 22. श्रीमती बसन्ती पत्नी जवाहिर 23. महामहिम राज्यपाल उ0प्र0 अधिशाषी अभियन्ता सरयू खण्ड बस्ती
–उत्तरवादीगण द्वितीय वर्ग
तारीख पेशी 06–01–2025
अपील बनराजी अदालत मुकाम मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्ट।

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 06 महीना 01 सन 2025 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है। अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जवाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 29 माह 11 सन 2024 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।
द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय
प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय– चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच, कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com